* ओ३म् *

ऋषि दयानन्द के पत्र

और

विज्ञापन ।

तृतीय भाग

पण्डित भगवद्दत्त अनुसन्धानाध्यक्ष

दयानन्द कालेज लाहौर

द्वारा

सम्पादित

आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा सिन्ध,

पञ्जाब बलोचिस्तान ने प्रकाशित किया ।

एङ्गलो ओरियण्टल प्रेस लाहौर में लालजीदास के

प्रबन्ध से छपा ।

जनवरी १९२७

प्रथम बार १००० प्रति]

[मूल्य ।=)

* ओ३म् *

पाठकों से निवेदन ।

ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन का यह तीसरा भाग जनता के प्रति भेंट किया जाता है। इस में जो पत्र छापे गये हैं, वह एक दो को छोड़ कर, पहली वार ही प्रकाशित किये जाते हैं। बहुत से पत्र श्री स्वामी जी के अनन्य भक्त सेठ रामशरणदास जी रईस मेरठ के सुपुत्र ला० धनपतिराय जी रईस मेरठ ने प्रदान किये हैं। कुछ पत्र पं० घासीराम जी एम० ए० ने दिये हैं। ये पत्र उन के पास बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के संग्रह में आये थे। मेरठ से यह सब पत्र महाशय मामराज जी बड़े पुरुषार्थ से मेरे पास लाये थे। इन सब महानुभावों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूं। अभी और भी पत्र मिल रहे हैं। वे चतुर्थ भाग में छापे जायेंगे। पाठक उन की प्रतीक्षा करें। विस्तृत भूमिका अन्त में ही लिखी जायगी।

लाहौर
३-१-२७

भगवद्दत्त

* ओ३म् *

ऋषि दयानन्द सरस्वती
के
पत्र और विज्ञापन ।

तृतीय भाग ।

(१) श्रीरस्तु (१४०)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालरावहरिदेशमुखादिभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम् । शमिहास्ति तत्राप्यस्तुतमाम् । आगे मुम्बई में चैत्र शुद्ध ५ शनिवार के दिन संध्या के साढ़े पांच बजते आर्य्य-समाज का आनन्द पूर्वक आरम्भ हुआ । ईश्वरानुग्रह से बहुत अच्छा हुआ । आप लोग भी वहां आरम्भ कर दीजिये । विलम्ब मत कीजिये । नासिक में भी होने वाला है । अब आर्य्य-समाजार्थ और संस्कारविधान का पुस्तक वेदमन्त्रों से बनेगा शीघ्र । इन्दुप्रकाश वाले विष्णुशास्त्री सुधारे वाला तो नहीं, किंतु कुधारे वाला मालूम पड़ता है । उसका प्रत्युत्तर करके उसके पास भेजा था, परंतु उसने नहीं छापा । इससे पक्षपाती भी दीखता है । अब वह अन्यत्र छपवाया जायेगा । संध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञविधान का भाष्य सहित पुस्तक यहां छपवाया गया है । सो १० पुस्तक आपके पास भेजा जाता

है। यथायोग्य उत्तम पुरुषों को बांट देना। उन नियमों में दो नियम बढ़े हैं। सो एक विवाहादि उत्साह किं वा मृत्यु, अथवा प्रसन्नता समय जो कुछ दान पुण्य करना उसमें से श्रद्धानुकूल आर्य्यसमाज के लिये अवश्य देना चाहिये। और दूसरा नियम यह है, जब तक नौकरी करने वाला तथा नौकर रखने वाला आर्य्यसमाजस्थ मिले तब तक अन्य को रखना और न राखना। और यथायोग्य व्यवहार दोनों रखें। प्रीतिपूर्वक काम करें और करावें। डाकतर माणिकजी ने आर्य्यसमाज होने के लिए स्थान दिया है, परंतु संकुचित है। सो अब बहुत बढ़ेंगे मिंबर। तब दूसरा नया बनेगा, किं वा कोई ले लिया जायगा। अत्यंत आनंद की बात है कि आप लोगों के ध्यान में स्वदेशहित की बात निश्चित हुई है। परमात्मा के अनुग्रह से उन्नति नित्य इसकी होय।

संवत् १९३१ मिति चैत्र शुद्ध ६ रविवार।

आपके पुत्र के हाथ संध्यादि भाष्य के पुस्तक १०।

(२) श्रीरस्तु। (१४१)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालरावहरिदेशमुखाभिधेभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम्। शमिहास्ति तत्राप्यस्तुतमाम्। आगे पत्र आपका आया। समाचार सब मालूम भया। गान आदि पुस्तक ४, छाता १ दवात १ सब हमारे पास पहुंच गये। आगे मुम्बई में कोट के मैदान में सद्गृहस्थ लोगों ने मण्डप रचा है। उसमें एकान्तरे वक्तृत्व प्रश्नोत्तर की सभा होती है। मुंबई के पण्डित लोगों

ने कहा कि स्वामी जी को व्याकरण में अच्छा अभ्यास नहीं है। इस बात को सुनके एक दिन व्याकरण की सभा किया। उसमें पण्डित लोग आये। व्याकरण में प्रश्नोत्तर होने लगा। पण्डितों की धूड़ उड़ गयी। पण्डित लोग चुप हो गये। फिर सभा के लोगों ने पण्डितों से कबूल करा लिया। पण्डित लोगों ने कबूल कर लिया कि स्वामी जी को बहुत अच्छा व्याकरण आता है। फिर पण्डित लोगों से कहा कि व्याकरण का २ प्रश्न हम आप लोगों को लिखा देते हैं। उसका प्रमाण पूर्वक उत्तर लिख ल्याइये। उस दिन से सब लोगों को बहुत विश्वास हो गया है। मुंबई में आर्यसमाज होने की तयारी है। और इन्दुप्रकाश के सम्पादक विष्णुशास्त्री के पास आप लोगों में से कोई ने "आकृष्णेनेति" मन्त्र के अर्थ हमारा उनके पर निश्चय के अर्थ पत्र भेजा होगा। उस पर उसने जो कुछ लिखा, सो सब मिथ्या ही है। और यह विष्णु शास्त्री धूर्त्त विद्याहीन हठी दुराग्रही मिथ्याचारी है। इस में सन्देह नहीं। क्योंकि उस विष्णु शास्त्री के विषय एक वानगी लिखते हैं कि ऐसी मूर्खता कोई विद्यार्थी भी नहीं करेगा। "ऋ गतिप्रापणयोः।" इस धातुसे रथ शब्द सिद्ध हुआ है। "रमु क्रीडायाम्" इस धातु से नहीं। इस्से यह अर्थ निर्युक्तिक और निर्मूल है। इस अंधा की भीतर और बाहर की दोनों फूट गई आंख। पाणिनिमुनि रचित उणादिगणसूत्र प्रमाण—हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्।* हथः। कुष्ठः। नीथः। रथः। काष्ठम्॥ यास्को निरुक्तकारः–"रथो रंहतेर्गतिकर्मणः" ।† इत्यत्र "रममाणोऽस्मिंस्तिष्ठतीति वेति"। इस से रमु धातु से ही रथ शब्द सिद्ध होने से

* २। २॥ † निरुक्त। ९। ११॥

'रमणीयो रथो रमतेऽस्मिन्निति वा'। अत एव विष्णुशास्त्री का कहना व्यर्थ ही हुआ। और उसको सभा के लिये निमंत्रण भी दिला है। परंतु वहां काय को आवेगा। वह तो झूठा झूठा घर से बैठा बकेगा। जिसने उसके पास पत्र भेजा सो भी व्यर्थ किया। क्योंकि ऐसे मिथ्यावादी मूर्ख के कहने का क्या ठिकाना। इसका खण्डन सभा में हमने सब को सुना दिया तथा लिख भी दिया है। परंतु वह धूर्त्त अपने पत्र में छापेगा नहीं। और जो छापेगा तो उसका आप लोग लिखना कि हमारा किया समाधान और उनका खण्डन छापे। जो विष्णु शास्त्री न छापेंगे तो फेर अन्यत्र छपाया जायगा। आप लोग इन नष्ट बुद्धि वाले पक्षपातियों को पूंछते हो निश्चय करने को, सो सायणाचार्यादिकों को ही यथावत् वेदार्थ का बोध नहीं है तो उनके पीछे चलने वालों का यथावत् ज्ञान कहां से होगा। इसी लिये इन धूर्त्तों को मध्यस्थ हम नहीं करते। क्योंकि इन पण्डितों की बुद्धि अविद्या लोभादि दोषों से नष्ट हो गई है। और सब अहमदाबाद के पण्डितों से उन्नीस वा बीस तथा वैसे ही सब पण्डितों का स्वभाव जानना। तथा हमारा नाम सुनते ही विपरीत उलटे चलते हैं। सो जिस पण्डित से पूंछोगे वह झूंठा ही कहेगा। इन पण्डितों को वेदार्थ ज्ञान का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है। पुस्तक आपने भेजे। सो आगये। आर्यसमाज का स्थापन शीघ्र करोगे तो अच्छा है।

संवत् १९३१ मिति फाल्गुन शुद्ध ९ मंगलवार।

(३) श्रीरस्तु। (१४२)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यो गोपालरावहरिदेशमुखाभिधेभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तुमाम्। शमिहास्ति तत्राप्यस्तुतमाम्। अग्रे भाषया वृत्तम्। आगे आपने जो दवाइत और छतरी भेजी सो हमारे पास आगई। और प्रार्थनासमाज में जो गान की चोपड़ी है सो हमारे पास नहीं आई। आगे यहां वक्तृत्व भी होने वाला है। वक्तृत्व के वास्ते स्थान भी बन रहा है। और आर्य्यसमाज का भी प्रयत्न अच्छा हो रहा है। आप अहमदाबाद में आर्य्यसमाज का ढील न करें। उसका यत्न किहीं रहें। और आपके पुत्र के हाथ ४ पुस्तक सत्यार्थ-प्रकाश के १२० पृष्ठ तक छप गये हैं सो आपके पास भेजे हैं। पहुंचे कि नहीं। १ आपके वास्ते। १ भोलानाथ जी के वास्ते। १ महीपतिराम जी के वास्ते। १ बेचरभाई के वास्ते। जो न पहुंचे होंय तो पत्र भेज के मंगा लीजिये। अब तक आप लोगों ने आर्य्यसमाज का प्रारम्भ किया नहीं। जो न किया होय तो जल्दी करै। और अच्छे काम में देर नहीं लगाना चाहिये। और देखिये कि आर्य्यसमाज नाम रखने से उस पर किसी प्रकार का दोष नहीं आता। क्योंकि उसमें ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना और सब उत्तम व्यवहार करने में आवेंगे। सो आर्य्य नाम श्रेष्ठों का जो समाज। और प्रार्थनासमाज नाम रखने से अनेक दोष आते हैं। प्रार्थना क्रिया, उसका समाज क्या होगा। तथा स्तुति उपासना और सदुपदेशादि व्यवहार भी

किये जाते हैं सो नामार्थ से विरुद्ध होता है। इस्से हम लोग कूं नाम ऐसा रखना चाहिये कि जिस्से दोष न आवे। सो आर्य्यसमाज ही नाम रखना उचित है। प्रार्थनासमाजादि नहीं। सो आर्य्यसमाज प्रारम्भ होने का विलम्ब करना उचित नहीं। जल्दी करना चाहिये। इसीसे सबका हित होगा अन्यथा नहीं। आप कुछ फिकिर न करें। यहां निषेकादि अंत्येष्टी पर्यंत संस्कार की चोपड़ी बनाने की तयारी हो रही है। और स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने के वास्ते वेदमंत्रों से चोपड़ी बनने की तयारी है। और नियमों की भी और संध्या भाष्य की पुस्तक छप के तय्यार होने चहे है। दो चार दिन में तयार होजायगा सो आपके वास्ते भेज देवेंगे। मण्डनराम बलदेवदत्त का नमस्कार यथोचित पहुंचे। आगे वेदविरुद्धमतखण्डन की पुस्तक जितनी मंगानी होय उतनी मंगा लीजिये। फिर नहीं मिलेगी। और सत्यार्थप्रकाश का भाग अभी एक २ रुपये मिलता है। सो जितना मंगाना होय मंगा लीजिये। और वहां का हाल सब लिखना। गान की चोपडी हमारे पास भेज दीजियेगा। इस पत्र का प्रत्युत्तर जलदी भेज दीजियेगा।

सं० १९३१ मिति फाल्गुन वद्य २ इंदुवार।

(४) श्रीरस्तु। (१४३)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालराव-देशमुख-भोलानाथ-महीपतिरामशर्मभ्या हि श्रीयुतबेचराख्यादि-

भ्यश्च दयानंदसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तुमाम्। शमिहास्ति तत्रत्यं चाशास्महे। आगे आपका पत्र आया। देख के अत्यानंद हुआ। यहां के आर्य्यसमाज अच्छी तरह चलता है। प्रतिदिन उन्नति ही होती जाती है। और ईश्वरकृपा से नित्य नित्य बढ़ता ही जायगा।

आर्याभिविनय के २ अध्याय तो बन गये। और चार आगे बनने के हैं। आगे संस्कारविधान पुस्तक भी अवश्य शीघ्र ही बनेगा। आर्यसमाज के नियम और उसकी व्याख्या पुस्तक छपता है। फिर आपके पास भी भेजेंगे। सत्यार्थप्रकाश के भी १३ फार्म छप के आगये हैं। आपके पुत्र के हाथ भेज जायगे। ज्येष्ठ वद्य १५ के पूर्व वा पश्चात् पूना को हमारा जाने का विचार है। सो जिसको लिखने का योग्य होय, उसको आप लिखना। बडोदे को जब आप लिखेंगे, तब आवेंगे। वहां भी आप लोगों को आर्यसमाज उस समाज का नाम प्रसिद्ध चलाना चाहिये। उसमें बडा फायदा है। विचार से यही ठीक दीखता है। फिर जैसी इच्छा होय वैसा करो। परंतु स्वदेशादि सब मनुष्यों का निर्विघ्न हित आर्यसमाज से यथार्थ होगा। अत्रेऽस्त्यत्रातीवानंदस्तत्रोऽप्येवमेवास्त्वीश्वरानुग्रहेणेति किं बहुना लेखेन बहुज्ञेषु।

संवत् १९३२ मिति चैत्र वद्य ९ शनिवार।

और शिक्षापत्रिके खण्डन की गुजराती भाषा व्याख्या भी होगई है। उसके तीन वा चार फार्म होंगे। १५ वा १६ रुपैये फार्म के हिसाब से ५० वा ६० रुपैये लगेंगे। सो वहां छपाओगे वा मुम्बई में। परंतु जो मुम्बई में छपेगा तो अच्छा होगा। इसका उत्तर शीघ्र देना।

(५) श्रीरस्तु । (१४४)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्य. श्रीयुतगोपालराव-हरीदेशमुख-भोलानाथ-महीपतिराम-बैचरभायाख्यादिभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम्। शमिहास्ति तत्रत्यं नित्यमाशास्महे। आगे पूना में महादेव गोविन्द रानडे, माधवराव मोरेश्वर कुंटे तथा लस्कर में गंगाराम भाऊ आदि पुरुषों ने अच्छी प्रकार व्याख्यानादि प्रबन्ध पूर्वक कराये। और व्याख्यान छपवाते भी हैं। तथा वेदभाष्य बनवाने के लिये पण्डित रखने के वास्ते कुछ फंड जमा किया है। और कुछ करने का भी है। तथा आर्यसमाज स्थापन अवश्य करना। इस लिये दो वक्त सभा होके व्यवस्थापक मण्डली निश्चित हो गई है। और एक सभा करने वाले हैं। उसमें प्रधान मन्त्री और कोषाध्यक्षादिक निश्चित करके आर्य समाज का आरम्भ करने वाले हैं। सो शीघ्र ही होगा ऐसा मालूम पड़ता है। अन्य सब वर्त्तमान "ज्ञानप्रकाश" समाचार से आप लोगों ने देखा ही होगा। आगे हम यहां से सतारे को जाने वाले हैं दो एक दिन में। अथवा बड़ौदे की ओर आने वाले हैं। सो जब यहां से वा सतारे को जाके मुंबई की ओर चलेंगे तब एक आद दिन दादरे के रेलघ[र] पर ठहर के उधर आने का विचार है। सो दादरे से आपके पास तार द्वारा खबर देने में आवेगी। फर जैसी आप खबर देंगे कि प्रथम बड़ोदे को ही आना किं वा सुरत और भरूच को होके बड़ोदे को आना, वैसा किया जायेगा। आगे एक पण्डित रखने के लिये महादेव

गोविन्द आदि ने ५० रुपैयों का निश्चय किया है। तथा मथुरादास लौजी और छबिलदास लल्लू भाई आदि आर्यसमाज के सभासदों ने भी वेदभाष्य होने के लिये २०००० रुपये जमा करने के लिये सेर १०० रुपैयों का खड़ा करके १०००० रुपैये तक तो सेर भरणये हैं। और बहुत शीघ्र वे लोग बीस हजार ही रुपैये जमा कर लेंगे। ऐसा मालूम पड़ता है। एक पण्डित के लिए राजा जयकृष्णदास जी ने स्वीकार किया ही है। तथा यहां महादेव गोविन्द आदि की तथा हमारी भी इच्छा है कि एक पण्डित के रखने के लिए ५० रुपैयों का प्रबन्ध आप लोगों की ओर से होय तो अच्छा है। फेर जैसी आप लोगों की इच्छा होय वै कीजिये। आगे हम बहुत आनन्द में हैं ईश्वरानुग्रह से। तथा आप लोग अत्यन्त आनन्द में रहना। आगे अन्य सब लोगों से हमारा आशीर्वाद कह देना।

संवत् १९३२ श्रावण शुद्ध ८ मंगल।

यहां के पण्डित लोग सामने तो कोई भी नहीं आये किन्तु दूर से बड़ बड़ किया और करते भी हैं सो जानना।

(६) श्रीयुक्तास्सन्तु। (१४५)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालरावदेशमुखशर्म्मभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम्। शमिहास्ति तत्रत्यं च नित्यमाशास्महे। आगे पूना और सातारा का वर्त्तमान वर्तमान पत्रों से सुन लिया होगा। एक नवीन बात यह है कि पूना में आर्य्यसमाज स्थापन होगया है। आगे आर्य्यसमाज स्थापनार्थ दो सभा पूना में हुई थी। सो तो समाचार पत्रों से जाना होगा। परंतु हम सतारे से आये तब यह निश्चित हुआ कि महादेव गोविंद रानडे प्रधान,

केशवराव गोडबोले मन्त्री। जितने प्रार्थनासमाज के सभासद् थे वे सब और अन्य बावा गोकुले तथा काशिनाथ गाडगील एवं गंगाराम भाऊ आदि लस्करस्थ ६० वा ७० सब सभासद् हुवे हैं। और अन्य भी बहुत होने वाले हैं। तथा सतारे से भी कल्याणराव खजांची हेडमास्तर आदि तथा कृष्णराव विट्ठल विंचुरकर जज्ज आदि उसी वक्त मेरे सामने आरम्भ करने वाले थे। परंतु हमने कहा कि शीघ्रता मत करो। सो कुछ दिन के पीछे करने वाले हैं। आगे राणी का पुत्र आ के जब तक कलकत्ते की ओर न जायगा, तब तक मुम्बई में रहने का विचार है। फेर सुरत, भरूच, वडोदे की ओर आने का विचार है। मुम्बई के समाज की अच्छी प्रकार उन्नति होती जाती है। तथा पांच हजार रुपेये पर्यंत वेदभाष्य बनाने के लिये इकट्ठा कर लिये हैं। और आगे होते जाते हैं। सो २०००० वा २५००० करने वाले हैं। सो मालूम होता है कि कर लेंगे। एक पण्डित का खोज होरहा है संस्कार की पुस्तक बनाने के लिये। सो अब तक मिला नहीं है। सो वहां कोई ऐसा पण्डित होय तो भेज देओ। ४०, ५० वा ३० पर्य्यन्त मासिक का बने तो भेज देना। आगे आप लोगों को ईश्वर प्रसन्न रक्खे। हम भी तदनुग्रह से प्रसन्न हैं। आगे भोलानाथ साराभाई, बैचरदास अम्बाईदास तथा महीपतराम आदि को हमारा आशीर्वाद कहना।

संवत् १९३२ मिति आश्विन वद्य २ शनि।

(१) ओम् (१६)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमा० वनमालीसिंह योग्य इतो स्वामी दया० आशीर्वाद। पौष शुदी २ रविवार को हम दिल्ली फैंश गये हैं। सो आपको लिखा जाता है कि विज्ञापनपत्र हजार १००० और वेदभाष्य पुस्तक १००० चिट्ठी देखते ही भेजो। और बाकी पुस्तक लाजरस कम्पिनी में रहने दो। भ्वां मैं उठाना नहीं। पत्र देखते ही २००० पुस्तक और चिट्ठियां देशावर सें हमारे नाम की आई थी। और जो वेदभाष्य देखकर सूचीपत्र बनाया था। उस को वी लेते आना क्योंकि तुम को हमारे पास रहना होगा। और जो कुछ किराया रेल का होगा। सो इहां सैं दे दिया जाइगा। अगर जो पुस्तक लाजरस कम्पिनी ने रमाने कर दी हो तो वी आपु हमारे पास चले आना। अग्रे किमाधिकम्।

पौष शुदी ४ भौमे सं० १९३३

---

(२) नं० १००७ (१४७)

श्रीयुत कृपाराम स्वामी आनन्द रहो। ता० १ फरवरी सन् १८७९ का लिखा रजिस्टर पत्र पहुंचा। देख कर आनन्दित होके समाचार जानके प्रत्युत्तर लिखता हूं। वहां रहने वालों से मेरा आशीर्वाद कहना। वहां आने में मुझको बहुत प्रसन्नता है। परन्तु मैं अनुमान करता हूं कि जो बन सकेगा तो सं० १९३६ वैशाख लगते ही आने का सम्भव है। यहां सहारनपुर से ता० ६ फरवरी को रुड़की को जाके वहां ८ वा १५ दिन रहके हरद्वार में जाके कनखल और ज्वालापुर के बीच नहर के पुल पर बड़ी सड़क पर मूला मिस्तरी के बाग़ में डेढ़

महीना ठहरने का विचार है। पीछे आप लोगों के यहां आने का विचार है। सो जानिये। क्या आप लोगों से मैं नहीं मिला चाहता ऐसा सम्भव है।

संवत् १९३५ मिति माघ शु० १० आदित्यवार।

दयानन्द सरस्वती

---

(३) [कार्ड] (१४८)

स्वामी कृपाराम जी आनन्दित रहो। इस पत्र का उत्तर हम लिख चुके हैं। हम यहां छः सात दिन रहेंगे। जो तुम शनिवारको आओगे तो मिल जायंगे। और एक चिट्ठी बलदेवसिंह के विषय में हमने भेजी है। तुम्हारे पास जो पहुंची होगी उसी में। बाकी जब तुम यहां आके मिलो तब सब निश्चय होगा। और हम पहले लिख चुके हैं कि मनुष्यों का आत्मा कपटी। पहले कहते हैं कि हम ऐसा २ करेंगे। पीछे वक्त पर कुछ भी नहीं।

मिति भाद्र सुदी ४ मंगलवार संवत् १९३७।

दयानन्द सरस्वती

---

(४) ओ३म्। (१४९)

बाबू कृपारामजी आनंदित रहो। विदित हो कि पत्र तुम्हारा पहुंचा। समाचार ज्ञात हुवे। और जो तुमने ५०००० पचास हज़ार की सही कराके मेरठ भेज दी, सो अच्छा किया। और ब्राह्मी ओषधि सेर भर का पारसल करके उदयपुर में भेज दो। यहां उदयपुर का समाचार अतीव प्रशंसनीय है। और सुनकर सबको आनंद भी होगा। श्रीमान् आर्य्यकुल-दिवाकर महाराणाजी बहुत योग्य हैं। उन्होंने

हमारे उपदेशानुसार अपनी दिनचर्य्या, राजकार्य्य और धर्म-कृत्य भी करना आरम्भ कर दिया है। प्रातः सायंकाल सात बजे मेरे पास नित्य प्रति आया करते हैं। कभी २ रात्रि को मैं शम्भु-विलास महिल में जाया करता हूं। प्रातःकाल कुछ योग वा राजनीति की शिक्षा होती है। और सायंकाल दर्शन-शास्त्रों के उपयोगी विषय पढ़ते हैं। उनके साथ बहुत से भाई बेटे तथा अमात्यवर्ग भी पढ़ते हैं। और सब अच्छी बातें हैं। आगे जो २ उत्तम बात होने वाली हैं, होंगी, तो सबको प्रसिद्ध कर दी जायंगी।

सं० १९३९ मार्गशीर्ष वदि ५, ता० २९ नवम्बर।

दयानन्द सरस्वती

(१) [उर्दुपत्र] (१५०)

लाला रामशरनदास जीव साहिब आनन्दित रहो।

जो कि तजवीज़ हुई है कि आर्यसमाज की तरफ से एक छापह खानह जारी किया जावे। और हर एक हिस्सा मुब्लिग़ सौ रुपया का मुकरिर हुआ है। लिहाज़ा हमारे भी उसमें दो सौ रुपया के दो हिस्सा शामिल कर लेवें। और जब आप चाहें रुपया मज़कूर हम से ले लेवें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

मेरठ २० जनवरी सन् १८७९] दयानन्द सरस्वती [

(२) [उर्दु कार्ड] (१५१)

लाला रामसरन दास साहिब आनन्दित रहो।

वाज़ेह हो कि हम कल यहां से रवानह होकर भरतपुर पहुंचेंगे। और हम ने आर्यसमाज के नियम यहां छपवाये थे।* वे ज्यादह नहीं। लिहाज़ा थोड़े आप के पास रवानह होते हैं। रसीद भरतपुर में हमारे पास रवानह कर देना। सब सभासदों को नमस्ते।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दयानन्द सरस्वती { आगरा
९ मार्च सन् ८१।

(३) (१५२)

लाला रामशरण दास जी आनंदित रहो।†

विदित हो कि तुम बखतावरसिंह का मामला शीघ्र कर दो। हम ने यहां अच्छे २ पुरुषों से पूंछा। उनों ने यही उत्तर दिया कि जब अकरारनामा में वह हस्त[क्ष]र कर चुका है तो अब उसका कुछ नहीं जोर चल सकता। अर्थात् जैसा पंच लोग फैसला करेंगे वैसा ही कचहरी में स्वीकार होगा। और आप भी विचार कर लीजिये। जैसी आप लोगों की राय हो वैसा शीघ्र करना उचित है परन्तु अब वह एक प्रकार का विघ्न डालता है जिस में कि मामला फैसला न हो। अब उस से

* इस पत्र के साथ "आर्यसमाज में दाखिल होने की दरख्वास्त" और "आर्यसमाज के असूल" का उर्दु में छपा एक कागज है।

† यह सारा पत्र श्रीस्वामी जी के अपने हाथ का लिखा हुआ है।

कुछ भी न पूछना और जनाना। जो आप लोगों की राय में आवे सो फैसला कर देना। सब से हमारा आशीवाद कह देना। ता० १७ जनवरी सन् १८८२ ई०   [द० स०]

(४)   (१५३)

लाला रामशरण दास जी आनंदित रहो।
मुंशी इन्द्रमणि के मामले के खरच में तुम को अखतयार है। जो मुनाशिब जानो सो देओ। और अपील जरूर हाईकोरट में जाय। और पांच जजों के बीच यह मामला हो। ऐसा बंदोबस्त कर देना। इस के खरच के लिये जहां २ चंदा होता है। और तुम योग्यता जानो उस २ जगह को और भी चंदा होने के लिये लिखो। मेरठ समाज में पहले बहुत खरच हो चुका है। इस लिये तुम वहां चन्दा न करना। और मुंशी जी को लिखना कि घबड़ावें नहीं। किंतु अपने पक्ष पर श्रेष्ठ प्रमाण राजधर में दें। दूसरों के बहुत दोष दिखाने से भी अच्छी तरह कार्यसिद्धि नहीं होती है, यह विचार पूरा २ रखें।

फर्रुखाबाद से दो सभासद तोताराम और लाला सन्नूलाल काशी वैदिक यंत्रालय में गये हैं। वे सब हिसाब का बंदोबस्त यथावत् करेंगे। तुम अब किसी आदमी का खोज न करना। परन्तु वहां रहने के लिये किसी मुंशी का बंदोबस्त अवश्य करना जो हमेसा छापखाने में रहे और योग्य हो। तीनों भाषाओं का यथायोग्य काम करें। और मातबर हो।
मि० आ० १४॥   [दयानन्द सरस्वती

(१) (१५४)

Umritsur 21st. July 1877.

My Dear Baboo

Your letter of the 17th. instant duly come to hand. I was really glad to learn from it that by the mercy of Supreme Being you are in enjoyment of perfect health. According to your request and wishes I herewith send a pattern of the Veda's monthly commentaries also a copy of prospectus of the same for your information. The subscription for the current year has been fixed Rs. 4-8-0 only including postage, but for the future years, the amount of subscription will be increased or decreased according to the size of the work. I'll be very glad to inform you now and then all about my gradual progress in my undertakings and regular movements from place to place without fail. Hoping you are well and rejoicing. Please accept my best *asheerbad.* I have intended to stop at Umritsur up to the end of August, and have arrived here since the 12th. inst., from Lahore.

Your well wisher

Pandit Swami Dayanund Sarusswatti,

Sd. दयानन्द सरस्वती

P. S.

Address me Umritsur in the garden of Mohomed Jan Raees of the station.

Five parts for the five past months have already been published up to the end of June and the year for the work commences from February 1877.

To

Baboo Deena Nauth Gangooly,

Darjeeling.

(१) (१५५)

पण्डित भीमसेन जी आनन्दित रहो।

अब तुम ने ८ दिन पीछे चिट्ठी भेजना बंद क्यों कर दिया। बराबर आठ दिन पीछे चिट्ठी भेजा करो। और यह लिखा करो कि इस सप्ताह में इतनी पुस्तकें छपीं और यह २ काम हुआ। और अब क्या होता है। आगे सप्ताह में कौन २ काम होने वाला है। और जब २ चिट्ठी लिखा करो मुंशीजी से पूछ देखा करो कि इन ८ दिनों में कितनी पुस्तकें छपीं। और जब २ छप कर तैयार हुआ करें सब गण कर संख्या लिखा करो। और मुंशीजी तो माहवारी आमदनी विक्री के रुपयों का हिसाब चिट्ठी लिखते ही हैं। तथापि तुम भी वखत २ सब पूंछ लिया करो। और मुंशीजी से कहना कि तुम को कुछ भी शंका न करनी चाहिये। आप इस्तिफा शरकारी नौकरी का दे दीजिये। जब तक तुम काम करने वाले हो, जब तक तुम्हारे शरीर में प्राण है और सामर्थ्य है तब तक आनन्द में काम किया करो। और पश्चात् भी तुम्हारी सलाह से काम हुआ करेंगे। और वसीयतनामा की सभा के सभासद सब आर्य्यसमाज के हैं। किसी प्रकार की हानि उनके लिये न करेंगे। और निश्चय है कि मुंशीजी भी ऐसे नहीं हैं कि कभी धर्मविरुद्ध काम करें। और वसीयत-नामे में यह अवकाश रखा है कि चाहे जिसको रजष्टरी जितने अधिकार वा धन देने आदि के लिये मैं करा दूंगा। उस का पूरा करना सभा को अवश्य होगा। और अधिक न्यून अदल बदल वा दूसरा वसीयतनामा करने का अधिकार मैंने अपना पूरा रखा है। चाहे किसी सभासद को निकाल

दूं वा किसी अन्य सभासद् को भरती कर दूं। इत्यादि नियम इसीलिये रखे हैं कि जो चाहें सो हम कर सकते हैं। ये सभासद् मुंशी जी के सुहृद ही हैं। और सब विद्वान् और धार्मिक हैं। किसी के लिये अन्याय की वृत्ति नहीं करते। तो क्या मुंशी जी के लिये अन्यथा प्रवृत्ति करने को उद्यत हो सकते हैं। कभी नहीं। क्योंकि धार्मिक लोग सदा धर्मप्रिय और अधर्मद्वेषी ही होते हैं। क्या मैं वा वे सभासद् मुंशीजी को परोपकार के लिये प्रवृत्त हुए नहीं जानते हैं। इस से यह पत्र मुंशी बखतावरसिंह जी को एकान्त में सुना देना। और इस पत्र को अपने पास रखा चाहें तो दे देना। तुझ को यह पत्र इस लिये लिखा है कि तू भी इस का साक्षी रहै। और यह लेख मैंने अपने हाथ से इस लिये किया है कि यह बात गुप्त रहे और समय पर काम आवे।*

ह० दयानन्द सरस्वती

(२) (१५६)

पंडित भीमसेन जी आनंदित रहो।

आश्विन सुदि ७ रविवार के लिखे हुए पत्र तुम्हारे आये। तथा अक्टूबर १२ का लिखा पत्र मुंशी [बखता]वर का आया। हाल विदित हुआ। पुस्तकों का हिसाब तुम से वा २।४) रुपैये लगकर भी किसी पुरुष की सहायता से जैसे हो सके वैसे करो। और पुस्तक तथा और पदार्थों को

* यह पत्र आर्यदर्पण मई सन् १८८६ पृ० ११७–११८ पर छपा है। हमने इसे वहीं से लेकर यहां धरा है।

अच्छी प्रकार गण कर ताला कुंजी अपने हाथ कर ले । और मुंशी बख्तावरसिंह लिखते हैं कि किसी मनुष्य को शीघ्र छापेखाने में भेज दो क्योंकि प्रेसमीन आदि कारीगर चालाक होते हैं। उन के सब काम के वह अच्छे समझ ले । सो मेरठ वा फर्रुखाबाद आदि को हम पत्र भेज चुके हैं । तुम्हारी सहायता के लिये कहीं से कोई मनुष्य आया जाता है । वह भी सब काम समझेगा। परन्तु तुम अच्छे होशिआरी के साथ सब काम की जांच रखना । तुम किसी तरह हा गा।-फिल न होना । आर्य्य दर्प्पण इस महीने का छप जाने दो । परन्तु आगे को कोई भी और काम बाहरी न रहे । जो रुपैये ३००) जमा किये हैं उन का आठ आने ॥) सैकड़े से ब्याज मिला करेगा। हम से और मिरजापुर के भवानीरामजी के बेटे से पहले इस मामले की बात हो गई है । फिर भी उन के मुनीम से कहना कि मिरजापुर से चिट्ठी मंगा लेओ । और फर्रुखाबाद निर्भयराम जी को भी लिख दिया है। वहां से भी उन को चिट्ठी आजायगी ।

पुस्तक काव्यप्रकाश सटीक जो छपी है वह भेज देना और सर्वदर्शनसंग्रह । तथा जैनप्रभाकर से वा और जगह से जो जैन वा बौद्धमत वालों के ग्रंथ जैसे हम ने लिखे हैं भेज देना ।

[दयानन्द सरस्वती]

(३) ओ३म् (१५७)

पंडित भीमसेनजी आनन्दित रहो।

नमस्ते–तुम अपने शरीर का हाल लिखो–कि अब कैसा है। और बड़े अफ़सोस की बात है। देखो कि आज कल तुमको वहां पर रहना ज़रूर्यात से था। क्यिोंकि काम की कसरत इस वक्त हुई थी। मगर ख़ैर क्या किया जावे। तुम बेमारी की ज्यादती की वजहसे चले आये होगे। अब तुम यह लिखो, कि जो जो चीज़ कपड़ा वा पुश्तक वा और कुछ वस्तू जो सर्कारी हो, या रुपया जहां जहां तुम्हारे हाथसे जमा हो या तुम्हारी समझ में और जिस किसी का जमा कराया हुआ हो फौरन अपने हाथसे वा अपने भाई के हाथसे लिखवा कर ठीक २ काशी जी पं० ज्वालादत्तजी के पास भेजदो। ताकि उनको सब हाल मालूम होजावे। और ज्वालादत्त को हमने हमेशा के लिये काशीजी में भेज दिया है। जो हमारे पास था। और अगर तुम्हारी तबिअत दरुस्त होगई हो तो तुम लिखो कि हम आजकल आग्रे की तरफ आने वाले हैं। जो तुम आना चाहो तो दुसरा आदमी तुम्हारी जगेह न रक्खा जावे। मगर पहिले तुम हमको लिख भेजो। और जहां २ जो चीज़ रक्खी हो या तुम जो तोताराम के स्पुर्द कर आये हो, सब का व्योरा पूरा पूरा लिखो। और शिघ्र ज्वालादत जीको लिखभेजो. कि फ़लानी २ चीज़ फलाने के स्पुर्द में है। ताकि ज्वालादत्त को मिल जावे। और हमने तेरे लिखे मुताबिक़ यह काम हमने किया है। क्यिोंकि तुम कहते थे. कि हमारा पढ़ना नहीं होता। इसलिये ज्वालादत्त को हमने वहां भेजदिया है। अब तुम

अपने आने की कैफ़यत् मुफ़स्सिल लिखो कि आवोगे या नहीं। मगर जहां तक मुमकिन हो. सब चिज़ों की फहरिस्त कपड़ा रुपया पुश्तकां इत्यादि वस्तू छापे खाने की. जो कुछ होवें महाभारत वग़ैरा की पुश्तक सब चीज़ें जहां २ और जिस २ के पास जमा या तुम्हारा रक्खा हो-सबकी कैफीयत लिखदो। इन सब बातों का जवाब (कि मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूं. या काशीजी जाऊंगा और कुल चिज़ों की फ़हरिस्त कि मैंने वहां पर उनके पास भेज दई।) हमारे पास भेजना जल्दी। देरी नहीं करनी।*

ता० ७-नवम्बर स० १८८० ई० [दयानन्द सरस्वती]

मुक़ाम देहरादून.

(४) ॥ ओ३म् ॥ (१५८)

तारीख १५ नवम्बर सं ८० ई०।

मिति कार्तिक सुदि १४ सं० १९३७ चन्द्रवार

देहरादून से।

पण्डित भीमसेनजी आनन्दित रहो।

नमस्ते। तुम हमारे दोनों वेग कि जिस में हमारे वस्त्र साल जोडी आदि और बरतन रसोई आदि कहां पर और किस को सपुर्द कर के आये हो। और जो रुपया कोठी से तुम लाये हो उस का ब्योरा, कि किस २ क़दर और कित २ कितना और किस को सोंपा है। और मुंशीजी की निस्वत

---

* यह पत्र बहुत अशुद्ध लिखा हुआ है। किसी अनाड़ी लेखक का लिखा प्रतीत होता है।

छापेखाने में गड़बड़ करने के मामले में जान्ता हो या नोकरों चाकरों से सुन रक्खा हो, और या जो कोई चीज फौंडरी वग़ैरे लकड़ी आदि की बनाते या बनवाते देखा हो, सो सब का एक पत्र पर ठीक २ ब्योरा लिख कर काशी जी को भेज दो। और एक पत्र मुझ को शीघ्र लिख दो। क्योंकि वह सब बातों में युं कहता है कि मुझ को कोई चीज़ मालूम नहीं है। सब बातों का हाल भीमसेन जी जानते हैं। क्योंकि उस का कोई हिसाब किताब तो दरुस्त है ही नहीं। और सब बातों में गड़बड़ाट कर रक्खा है। ठीक २ जवाब दे नहीं सकता है। उलटा लड़ने को दौड़ता है। परन्तु मास्टर शादीराम जी और पण्डित ज्वालादत्त जी योग्य आदमी हैं। वे उस के कहने पर बुरा नहीं मानते। अपना काम उनसे निकालते हैं। वह अपनी साथ तुम को भी लपेटना चाहता है। और अपनी बदनामी तुम्हारी ऊपर रक्खा चाहता है। क्योंकि उसकी कई एक बातें वहां पर पकड़ी गई हैं। और मास्टर जी ने मालूम कर लई हैं। उन को उस ने यही जवाब दिया है कि मुझ को कुछ मालूम नहीं। भीमसेन जाने। देखो जैसे कि उस ने अंग्रेज़ी फ़र्मा चढ़ा रक्खा था। और तुम ने कहा था कि तुम विना आज्ञा स्वामी जी क्यों चढ़ाया। तब उस ने जवाब दिया था, कि अब जो मैं यहां से दूसरी जगेह ले जाऊं, तो मेरा चार पांच सौ रुपय का नुकसान होता है। और यह भी कहता है कि कोठी से रुपये लाने या लेजाने की निस्बत मुझ को कुछ भी मालूम नहीं है। और यह भी हम को यकीन है कि तुम्हारे पास ऐसी लिखत मिति वार

तो नहीं होगी, जैसा कि कब और कितना २ रुपया और किस के देने को आया। और किस को दिया गया है । मितिवार है या नहीं। अगर ऐसी क़िसम की हो तो बहुत अच्छी बात है। क्योंकि ऐसी लिखत के मौजूद होने से बहुत मतलब हासिल होगा । अगर तुम्हारे पास न हो, तो कोठी पर मितिवार सब रुपये की अम्मद रफ़्त मालूम हो सकती है। वहां से हो सकता है। और तुम सब वस्तुओं की तैदाद लिख कर जा जो तुम्हारी दानिस्त में हो, बहुत शीघ्र लिख कर एक पत्र काशी को और दूसरा हम को लिख भेजो, ताकि वह तुम्हारा नाम से बरी न होने पावे। और सब चीजों का पता ठीक २ बतला देवे। जो जो हिसाब रुपये जमा कर आने या सौंपने या मुंशी जी के काम में आने की निस्बत तुम को मालूम हो, वह भी, और जो हिसाब चलती वेर बाबत मौजूदगी रुपयों की कि जो मुंशी जी के पास जमा थे, और जो कोठी पर थे, हम तुम को लिखवा आये थे, वह भी सारी बातों का हिसाब लिख पढ़ कर जल्दी हमारे पास भेज दो। और काशी वालों को भी, इतला ददो, कि जिस्से वह लोग सब हाल जानकर मुंशी जी की निस्बत अदालत में दावा कर दें। और मुंशी जी भी तुम्हारी निस्बत कुछ झूट न कह सकें। जिन जिन बातों का सबूत फौंडरी आदि लकड़ी की किसी वस्तु का मुंशी जी की निस्बत तुम जानते हो या कोई लिखत पढ़त तुम्हारे पास इस क़िसम की मौजूद हो, कि जिस्से स्पुर्द करना किसी वस्तु आदि या रुपये पैसे का मुंशी जी की निस्बत ठीक सबूत होजावे, फौरन लिख कर हमारे और

काशी वालों के पास भेज दो। और अब वहां का काम बसबब मास्टर शादीराम व पण्डित ज्वालादत्त के उम्मद है कि अच्छी तरह से होगा। और मुन्शी जी की सारी कलई सब बातों की खुल जावेगी। देखो बड़े शोक की बात है कि वक्त के ऊपर तुम को बेमार हो जाना, और तुम्हारा वहां से जल्दी चले आना। और मास्टर साहब, ज्वालादत्त का तुम्हारे साम्हने न पहुंचना, यह तमाम कारण बखतावरसिंह के करने का छापे ख़ाने में हुआ। वर्नः तुम्हारे हुये, यानि तुम्हारे साम्हने ऐसा कभी न होता क्योंकि देखो, मुन्शी जी ने अकलमंदी से और चालाकी से आधी वस्तु छापे खाने की अपनी बना लई है। और रुपये का कुछ हिसाब नहीं देता और जो कोठी का हिसाब समझने के लिये मास्टर वा पण्डित कहते हैं, कि चलो, तो बिल्कुल जाना कबूल नहीं करता। और गाली गुफ्तार बकने लगता है। यह कुल कारण माल के हज़म करने का है। हम मिति मार्गशिर वदि २ बृहस्पतवार सम्वत् १९३७ को आगरे में पहुंचेंगे। इस लिये तुम को उचित है कि सारी बातों का जवाब लिख कर ठीक २ हम को आगरा में खबर दो, और एक पत्र लिखकर सारी बातों का हाल से जो २ तुम जानते हो और जहां तक मालूम हो सके, जल्द लिख भेजो। और तुम भी लिखो कि अगर हमारे पास आना समझो और तुम्हारा शरीर भी दरुस्त हो गया हो तो हम को लिखो। अगर तुम आवो, तो हम दूसरा पण्डित न रक्खें। मुफ़स्सिल लिखो। शीघ्र जवाब से इतला दो।

द० [दयानन्दसरस्वती]

(१) (१५९)

मुंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो।

वैशा[ख] सुदी ११ को कान्हपुर से फरुक्काबाद आनन्दपुर में पहुंच कर टोकाघाट पर कालीचरण रामचरण के बाग में ठहरे हैं ॥ पिछले पत्र में वर्त्तमा[न] जो लिखा है सो सब करते होगे। और कलकत्ते से टैपादि आ गया होगा तो वेदभाष्य का आरंभ कर दिया होगा। और जो न आया हो तो चिठी के देखते हिं कलकत्ते जाके टैपादि लाके शीघ्र ही वेदभाष्य का आरंभ चलाओ। और दूसरे पुस्तक का संधिविषयक का भी शीघ्र २ छपना चाहिये। व्यवहारभानु का पुस्तक छप गया हो तो भेजदो। और पिछले पत्र के लिखे मुताबिक सब काम करो। और पिछले पत्र का जवाब लिखो। सबसे नमस्ते कह देना। मिती वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार सं० १९३७ ॥

[दयानन्दसरस्वती]

(२) ओम् (१६०)

मुंशी ब[खतावरसि]ंह जी आनन्दि[त]* रहो।

आज रजस्टरी करके राजा शिवप्रसाद का उत्तर यहां से रवाना करेंगे। उसके पहुंचते बखत ही रसीद भेजनी। इस पुस्तक को प्रथम भीमसेन देखकर कंपोजीटर को समझा देवे। कहीं टूट फूट अशुद्ध न होने पावे। नोट जैसा कि इसमें है वैसा ही छपे। और इसकी भी २००० दो हजार कापी छपवानी। -) मूल्य। और वेदभाष्य के साथ जहां २ भेजना योग्य समझें वहां भी भेजना। [सब आर्यस]माजों में भेज देना। और [सन्यासि]

यों के पासभी। और जो भाष्य के गाहक योग्य हैं उन [सब] के पास एक]२ पुस्तक भेज देनी। सब कालेज ग[वर्नमेण्ट स्कूलों] और शरकारी पुस्तकालय में भी भेजना ॥

तुमारे लिखे प्रमाण सीसा (टैपआदि) के लिये सेठ *निर्भयराम से कह दिया है। जैसी तुम लिखो [गे वै]सी* कलकत्ते से आजावेगी। परन्तु प्रथम कलकत्ते में सौ रुपैये जैस [राज गुट] ी राम की दूकान पर भेज दो। उन्हीं में से जो २ चीजें तुम का चाहने पड़ेंगी सो २ वे भेज दिया करेंगे। और जो तुमने लिखा के अभयराम चुन्नीलाल अच्छी तरह से बन्दोवस्त नहीं रखते उसके लिये वहां काशी में एक साहूकार के पास रुपैये जमा करने के लिये यहां बन्दोवस्त किया है। उसी की दो [का]*न पर जमा करना। आर अभयाराम चुन्नीलाल के यहां केवल सौ रुपैये बाकी रहने भी देना जिस में [लेन दे]न न टूटे। फिर दिवाली पर हिसाब करके सब चुका लेना। तुमने जो पारसल भेजा ठीक २ पहुंचा। परन्तु उसका डाक महसूल बहुत क्यों लगा। जिस कारीगर ने ये दुपट्टा और अरंडी बनाई है उसको ३) रुपैये इनाम दे देना। मैं खूब जानता हूं कि तुम तन मन धन से काम करते हो। परन्तु मेरे जरूरी वार २ लेख से कुछ सन्देह न करना। क्योंकि तुम अपना और मेरा काम दो] नहीं समझते। संधि-विषय और वेदभाष्य [के पत्रे] आपने मंगवाये। वे इस बखत राजा शिवप्रसाद के [उत्तर देने से फु]रसत नहीं मिली। इस वास्ते नहीं पहुंचे। आगे ... जो* भैरव कंहार हमारे साथ आया था ... [उस] ने कलमदान खोल १॥) वा २॥) रुपैये चोर लिये थे। इस

[लि] ये उसको जितना मासिक चढ़ा था दिया। और म[ार्ग] [ख]र्च ॥।-) आने देकर यहां से निकाल दिया॥ जबतक यह भ्रमोच्छेद[न]* ग्रंथ छपके बाहर न हो तब तक किसी को मत दिखलाना। जब छप जाय तब काशीराज, राजा शिवप्रसाद, विशुद्धानन्द, बाल शास्त्री और रायशंकटाप्रसाद की लायब्रेली तथा पंडित सुबेराव और हरि पंडित जी को भी एक पुस्तक दे देना। और जिस २ को योग्य जानो उस २ को भी दे देना। बाकी मूल्य से देना। सबसे हमारा न[मस्ते क]ह देना। हम बहुत प्रसन्न हैं। आप लोग सब प्र···ये। संवत् १९३७ आषाढ कृष्ण २ गुरुवार।*

[दयानन्दसरस्वती]

(३) (१६१)

मुंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो।

हम आज मेरठ में पहुंचके लालकुर्ती वजार में रामशरणदास के बंगले में ठहरे हैं। और यहां महीना भर ठहरने का विचार भी है। जो कुछ चिठी पत्रादि भेजो मेरठ में इसी पत्ता से भेजना। तुम ने लिखा था कि पच्चीसवीं जून को दोनों वेदों १४ वां छपकर तैयार हो जांयगे। और हमने २४वीं जून को राजा शिवप्रसाद का उत्तर भेजा था। २६ वीं को पहुंचा होगा।

---

* इस पत्र पर अनेक स्थलों में श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से संशोधन किया है। 'जो···' भैरव से आगे सारा लेख उनके अपने हाथ का ही है। स्टार से परिचिन्हित कोष्ठों को छोड़ कर शेष सब कोष्ठों वा बिन्दुओं के स्थान का पत्र फटा हुआ है हम ने कोष्ठों में अपनी ओर से पूर्ति की है।

और वह भी पहिली अप्रेल* वा पांचवीं तारीख अप्रेल* त[क] छपके तैयार हो ही गया होगा। सब के पास वेदभाष्य के साथ रमाना भी तुमने कर दिया होगा। जैसा कि हमने पहिले पत्रों में लिखा है वैसा करना। तुमको चाहिये कि आप जो २ वहां की कारवाही २ दूसरे तीसरे पत्र में जो काम किया लिख भेजा करो। भीमसेन ने पांच रुपैये माहवारी के लिये लिखा। सो आजकल इतना अन्नादि महगा नहीं है। कि जिस में खान पानादि का निर्वाह न हो। और मेरे आये पीछे कोई भी पुस्तक छोटा वा बड़ा जिसका आरंभ मेरे पीछे आप ने वा भीमसेन ने किया हो नहीं पहुंचा। वेदभाष्य और राजा शिवप्रसाद का उत्तर छपकर अभी तक नहीं आया। संधि-विषय का अब तक प्रारंभ न हुआ होगा। एक फर्मा व्यवहार-भानु का छपना था ओ भी पूरा न हुआ होगा। अब भीमसेन कहता है कि मैंने बड़ा परिश्रम किया सो दो तीन महीने में क्या बनाके तयार किया। अपने लोगों की ये व्यवस्था है कि रुपैये के लिये तैयार और काम कुछ भी नहीं दिखाते। और जो हम काम देखेंगे तो आप ही बढ़ा देंगे। और वेदभाष्य और राजा शिवप्रसाद का उत्तर जलदी भेजना चाहिये। और राजाराम शास्त्री के लिये हमने लिख भेजा है कि पैंतीस रुपैये में मंजूर हों तो चल आवें और एक विद्यार्थी जो कि पचास श्लोक काम करके लिख सकता हो रसोई आदि के लिये पांच रुपैये माहवारी का लेते आवें। कुछ व्याकरण भी पढ़ा हो। और जो इनकार करे तो चालीस रुपय के बीच में दो

* यहां जुलाई के स्थान में अप्रेल भूल से लिखाया गया प्रतीत होता है।

पंडित अच्छी तरह लिख[ने] वाले बहुत जलदी आप और भीमसेन अच्छी तरह परीक्षा करके भेज देना। वे भी व्याकरण पढ़े हों। और भीमसेन [से] कह देना कि जब छापाखाने का काम अच्छी तरह चलेगा तब पांच रुपैये हो जांयगे। भारौल वाले ठाकर फतेसिंह के १७) रुपैये वेदभाष्य के लिये तीन वर्ष के हमारे पास जमा कर दिये हैं।

मिती आ० सुदी १ संवत् १९३७ [दयानन्दसरस्वती]

---

(४) [उर्दु पत्र] (१६२)

मुंशी बखतावरसिंह जीव आनन्दित रहो।

आज कल तुम्हारा कोई चिट्ठी पत्र नहीं आता। तुमने लिखा था कि २५ जून को वेदभाष्य तय्यार हो जावेगा। और २४ जून को राजा शिवप्रसाद का जवाब हम ने फर्रुखाबाद से तुम्हारे पास भेज दिया था। और वेदभाष्य को दरुस्त हुए भी आज १६ या १७ दिन हुए। राजा जी के जवाब का पुस्तक हद्द के दरजह ८ दिन में छपकर तय्यार हो सकते हैं। पर न मालूम अब तक क्यों नहीं तय्यार हुए। और हम ने तुम से कहा था कि दूसरे तीसरे दिन ख़त भेजते रहना। मगर अब २०-२० दिन तक आपके चिट्ठी पत्र का दर्शन नहीं होता। आप को चाहिये कि हफ़ता में दो दफ़ा चिट्ठी भेजा करो। और सब हाल कच्चा पक्का आमदनी ख़र्च का मुफ़सिल लिखा करो। और यह भी लिखना कि राजा शिवप्रसाद का जवाब और वेदभाष्य अब तक छप कर क्यों नहीं आया। और फाऊण्डरी यानि हरफ वग़ैरा ढालने का सांचा और औजार कलकत्ता से आये या नहीं। और हर्फ वग़ैरा ढालने शुरु हो

गये या नहीं । अब हम वेदभाष्य के पत्रे तय्यार कर रहे हैं । और सन्धिविषय के पत्रे भी शोधे जाते हैं । दो चार दिन में वेदभाष्य और सन्धिविषय के पत्र तुम्हारे पास पहुंचेंगे । और क्या आज तक हमारे नाम की कोई चिट्ठी काशी में ऐसी नहीं आई होगी जो हमारे पास भेजने के लाइक हो । जरूर आई होगी । मगर तुम भेजनी भूल गये होगे । और तुम जो अपने आर्यदर्पण निकालो तो जो वृत्तान्त मुंशी इन्द्रमन जी की बदनामी का मुसलमानों ने अपने अख़बार जामे जमशेद में छापा था, और उस का जवाब और मुख़तसर हाल अख़बार नैय्यरे आज़म मथरा मतबूआ ३० जून सन् ८० और अख़बार दबदबा कैसरी बरेली मतबूआ ३ जुलाई सन् ८० में छपा है । तुम भी अपने समाचार में छाप देना । उसमें साहब मैजिस्ट्रेट बहादुर मुरादाबाद के नाम तहक़ीकात का हुक्म गवर्नमेण्ट से आया है । और जो कोई काशी में और समाचार हो, तो उसमें से अंगरेजी से और भाषा बन सके तो जरूर छपवा दीजिये । और कलकत्ता में भी जो समाचार या अख़बार अंगरेजी का निकलता हो, और तुम उसमें छपवा सकते हो, तो वहां भी छपवा दो, और अमृतबाजार पत्रिका के एडीटर को भी लिख के इस को छपवा देना । और अब वेद भाष्य के १५ भेजने में तुम क्यों देर कर रहे हो । लोग घबरा रहे हैं । इसमें जितनी देर करोगे, उतना ही महा हानि का सबब होगा । और मुंशी जी का सब हाल मुफ़स्सिल लिख कर अमृतबाजार पत्रिका में और थ्यासोफ़िस्ट में छपने के लिये भेज देना । और हम यहां एक महीने तक ठहरेंगे ।

[दयानन्द सरस्वती]

(५) ओ३म् (१६३)

मुन्शी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो।

जो हम ने ऋग्वेद और यजुर्वेद के पत्र भेजे थे पहुंचे होंगे। कल और भी पत्रे भेजेंगे। हमने फरूखावाद को लिख भेजा और कलकत्ते का पत्र भी भेज दिया। परन्तु यह काम उन से होना कठिन है। अन्य किसी भद्र मनुष्य से कराना चाहिये। जो रुपये हमारे सामने कलकत्ते में भेजे थे उन का हिसाब लिख भेजना। जिने १७) रुपैये दिये थे हमको, वह ठाकर फतेसिंह पहिले के गाहक हैं। उसको भीमसेन भी जानता है। वह ठाकर जाल[म]सिंह का सम्बन्धी है। क्या उसका नाम रजष्टर में नहीं लिखा है। जो मुझ से पूछते हो। निम्न-लिखित पुरुषों की रसीद छपा देना कि जिनोंने दो पण्डितों के लिये जितने२ रुपैये दिये हैं॥ बाबू दुर्गाप्रसाद रईस फरुखा-वाद ने ५००) रुपैये अनाथों के पालन के लिये। १०) स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अनाथों के पालन। आर ५००) रुपैये वेदभाष्य बनवाने के लिये दिये। २५०) सेठ निर्भयराम रईस फरुखाबाद ने पण्डितों के लिये दिये। १५०) लाला काली-चरण रामचरण रईस फरुखावाद ने पं० वे० के लिये दिये। २००) लाला जगन्नाथ प्रसाद रईस फरुखावाद ने पं० वे० दिये। १००) लाला गणेशराम रईस फरुखाबाद ने पं० वे० के लिये दिये। ५०) लाला गुरुमुखराय रईस फरुखावाद ने पं० वे० के लिये दिये। ५०) लाला नारायणदास रईस फरुखाबाद ने दिये पं० वे० के लिये दिये। ६०) बाबू रूपसिंह अंग्रेजी क्लर्क कोहाट पंजाब ने पं० वे० के लिये दिये। ४०) आर्य्यसमाज दानापुर

ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज देहरादून ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज रुड़की ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज सहा[र]नपुर ने दिये। इस में इतना विशेष है कि पण्डितों को रख के वेदभाष्य को बनाने में १००) मावारी हम खर्च किया करेंगे। छः वर्षों तक इस में ५०) रुपैये मावारी देने में सब लोग और ५०) रुपैये देने में अकेला फरुखाबाद रहेगा। यह चन्दा छः वर्ष का है। शाय[द] और भी इकट्ठा भया होगा। अगाडी मालूम होगा।*

मिति श्रावण वदी १ संवत् १९३७।

[दयानन्द सरस्वती]

* दो पंडितों को रखने के लिये ६ छः वर्ष पर्यन्त देंगे। प्रति मास १००) रुपैयों के हिसाब से दिया करेंगे। मावारी १००) रुपैया में जितना चन्दा न्यून रहेगा उतना आर्य्यसमाज फुरुखाबाद दिया करेगा। और बाकी अन्य सब समाज देंगे। अर्थात् ५०) मावारी छः वर्ष तक अकेला फुरुखा[बा]द आर्य समाज और ५०) रुपैये मावारी अन्य सब समाज देंगे। परन्तु शोक है कि अब तक कोई योग्य पण्डित नहीं मिला है। बहुत ठिकानों में लिखा तो है। तुम भी जहां तहां लिखना और वेद भाष्य के टाटिलपेज पर जो विज्ञापन पंडितों के लिये लिखा है वह अवश्य छाप देना।

---

* इस पत्र की कई बातें, अर्थात् रुपयों का व्योरा मुंशी बखतावरसिंह जी को समझ नहीं आया। उन्होंने पत्र पर वहां२ चिन्ह कर के स्पष्टीकरणार्थ पत्र श्री स्वामी जी को लौटा दिया। स्वामी जी महाराज ने जैसा ठीक करके पत्र पुनः भेजा वैसा हम ने ऊपर छाप दिया है। तथा अगली पंक्तियां भी श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से उसी पत्र की पीठ पर लिख दीं। वे आगे छापी जाती हैं।

श्री स्वामी जी ।*
यह भी लिखिये कि यह रुपया एक दफा दे दिया वा वार्षिक देते हैं । सो सब वृत्तान्त सपष्ट करके लिखिये । जो रसीद गड वड छप जावे अच्छा नहीं । इसलिये जे। स्पष्ट हो जावे अच्छा है ।

(६) (१६४)

मुंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो ।
टाटाल पेज बादामी पर अछा होगा, छाप दो । आज यजुर्वेद और ऋग्वेद के पत्रे शोध कर भेज दिये हैं । तेली की चिठी कोई नहीं आई । ऐसे बीमारों को इनाम देनें लगोगे तो कहां पूरा पड़ेगा । पंद्रह का अब भेजोगे और सोलह सत्रका फिर, ये बहुत अच्छा किया । ३२ २ पृष्ठ से अधिक मत बढ़ावो । नहीं तो हमारे वेदभाष्य के बनने में हरकत होगी । ये वी नोटिस दे दो वेदभाष्य के टाटल पेज पर कि हमको एक ऐसा पंडित चाहता, कि जो पाणि[नीय] व्याकरण अर्थात् अष्टाध्यायी, महाभाष्य, पूर्वमीमांसा, न्याय, निरुक्त, निघंटु, पूर्व मीमांसा† न्याय, वेदान्त, उपनिषद, छन्दोग्रंथ आदि वेदांगों का पढ़ा हुआ संस्कृत की भाषा व्याकरण की रीति से सुन्दर† बना सकता हो एक वेद अथवा दो वेद भी पढ़ा हो संस्कृत की शुद्धि कर सके । उसको पचास वा साठ रुपैये माहवारी देंगे । परंतु शीघ्र शुद्ध लिखने वाला हो । यह तुमारे पास काशी में तुमको खबर देदे । मिती श्रावण वदी २ शु० संवत १९३७ ।

[दयानन्दसरस्वती]

* पूर्व पत्र की पीठ पर यह लेख मुंशी बखतावरसिंह जी का है ।

† पूर्वमीमांसा—सुन्द० तक इतना लेख श्री स्वा० जी की अपनी लेखनी से है ।

(७) (१६५)

मुंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो !*
१६ अगस्त का लिखा पत्र तुम्हारा आया। वर्त्तमान विदित हुआ। जिन तीन के पास सत्यार्थप्रकाश भेजने को लिखा था भेज दिये। और कल इन दोनों के पास भेजेंगे। एक २ पाकट पर ~)॥ अढ़ाई २ आने के टिक[ट] डाक महसूल के लगे हैं। जो संस्कृतवाक्यप्रबोध पर पुस्तक छपाया है सो बहुत ठिकानों में उनका लेख अशुद्ध है। और कै एक ठिकानों में संस्कृ० में अशुद्ध भी छपा है। इस अशुद्धि के कारण तीन हैं। एक शीघ्र बनना, मेरा चित्त स्वस्थ न होना, दूसरा भीमसेन के आधीन शोधने का होना और मेरा न देखना न प्रूफ को शोधना। तीसरा छापेखाने में उस समय कोई भी कंपोजीटर बुद्धिमान् न होना लैंपों की न्यूनता होनी॥ इसके उत्तर में जो २ उनकी सच्ची बात है सो २ शोधक और छापा का दोष रहेगा। इसके खंडन पर भीमसेन का नाम मत लिखना किन्तु पंडित ज्वालादत्त के नाम से छापना। इस पर आगे के आर्य्यदर्पण में छापने के लिये पं० ज्वा० भी लिखेगा। भीमसेन भी लिखो परन्तु उसका नाम उस पर छववाने से उसके पढ़ने में वहां के लोग बहुत विरोध करेंगे।

मोहनलाल विष्णुलाल आदि का हिसाब वहीं जो मुंशी समर्थदान से बही दी थी उसमें और भूमिका तथा वेदभाष्य के टायटिल पेज और ग्राहकों के रजष्टर में है। देखके भेज दो। हमने सब रजष्टर अन्य सत्यार्थ आदि पुस्तकों के भी

* यह सारा पत्र ऋषि के अपने हाथ का लिखा हुआ है।

वहीं रखें हैं। फिर हम से हिसाब उनका कैसे मांगते हो। देख कर भेज दो। यहां हमारे पास सिवाय एक रजष्ट्[र] के दूसरा कागजात कुछ भी नहीं है। नवीन हाल ये हैं। एक मुंशी जी का दूसरा मेरे ठहरने का भी ठिकाना मेरठ का हो नोटिस छापना। तीसरा आज कल रमाबाई यहां कलकत्ते से आके ठहरी है। आज उसका व्याख्यान समाज में स्त्रियों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य विषय में है। दूसरा आगामी शनि को भी होगा। यह संस्कृत पढ़ी है। बहुत अच्छा संस्कृत भाषण भी करती है। इसका विशेष आगे लिखेंगे। चौथा जो मैं कह आया था कि जो धन आवे वह वहां न रखना चाहिये किन्तु जिसका नाम फुरुखाबाद से लिख भेजा था उसी की दुकान में जमा रक्खा करो, अपने पास मत रक्खो। पांचवा असरफियों का हिसाब लिख भेजना। छःठा वसीयतनामा रजष्टरी करा लिया है। जब तहसील की कचहरी से नकल मिलेगी। तब वहां भी एक नकल भेजेंगे। छापखाने रख लेना। सातवां यह जो तुमने लिखा कि दुकान में ४००) रुपैये रह गये कलकत्ते चले गये। इसके लिखने का क्या मतलब है। तुम्हारे पास मासिक खरचे से आमदनी अधिक होती है। उसमें कलकत्ते का भी मावारी हिसाब में खरच आ जाता है। फिर वे दुकान के रुपैये सिवाय २००) के किस लिये उठाये। आठवां जो आपने लिखा था वह सब क्षमा किया गया। नवमा। वेदभाष्य का प्रूफ और छापना संस्कृत वाक्य प्रबोध के तुल्य न होजाय। दशवां। मैं यहां मेरठ में १५ दिनों से कम न रहूंगा। हम लोग सब आनन्द में हैं। आप लोग भी आनन्द होंगे।

कल परसौ और भी पत्रे दोनों वेदों के भेजेंगे । सब से हमारा नमस्ते कहना। तेली आदि के मासिक बढ़ाने के लिये जब १६ वां और १७ वां अंक छपके आवेंगे। १४ वे अंक से लेके १७ अंक तक जो काशी में छपे हैं देखके जिसकी जैसी योग्यता होगी वैसा बढ़ाया जायगा। और १४ वें अंक से ले १७ वें अंक तक दोनों वेदों के अंक भेजके आगे बराबर फिरोजपुर आर्य्यसमाज के नाम प्रति मास भेजा करो। इस समाज में क्यों नहीं पहुंचा। क्या यह आपकी भूल है वा डाक वालों की गड़बड़ है। यह अच्छा होगा कि जब २ डाक की गड़ बड़ हो तब २ पोष्ट इन्स्पॅटर को लिख के जवाब लेना। नहीं बहुत गड़बड़ करेंगे। शमस्तु मि० श्रा० शु० १३ बुध सं० १९३७

[दयानन्दसरस्वती]

(८) ओ३म् (१६६)

मुंशी बख्तावरसिंह जी आनन्दित रहो ।

पत्र आप का आया हाल मालूम हुआ। मुंशी इन्द्रमणि जी का विषय जो हमने वेदभाष्य के टाईटिल पेज पर छपाने को लिखा वह हमारा दोष है। परन्तु आर्य्यदर्पण और मेला चांदापुर प्रत्यक्षर एकसा ही छाप दिया है यह दोष तो दुर्निवार्य्य है। क्योंकि इसमें वृथा ही कागज खराब करना है। इस को कौन लेगा। अब ऐसा न होना चाहिये । सिवाय अच्छे समाचार और नोटिस आदि छापना उचित है। देवीदत्त और शंकरलाल हम से नहीं मिले। और वेदभाष्य के पत्रों की व्यवस्था भीमसेन लिखा करेगा उसी से कह दो जिस वेद के जिस

पृष्ठ से जिस पृष्ठ तक दरकार हो दो तीन महीने पहिले से लिख भेजगा। पहिले पत्र में हिसाव के लिये जो नकशा की व्यवस्था लिखी है सब यन्त्रालय का हिसाब समझकर जलदी लिखकर भेज दो। हम अब यहां थोडे ही दिन तक रहेंगे । दो दिन पीछे लिखेंगे जहां जाना होगा। और १ रीम का कितना रुपया, कितना दस्ता, कितने ताव, कितने पृष्ठ होते हैं, यह भी लिखो। और हमारे कहे सुने बिना वेदभाष्य के अंक का दाम वढाया मत करो। और वहां यह भी कह देना सब जनों से कि सत्यनाम सिंह मथुरा में हैं। हम आनन्दित हैं। आप लोग आनन्दित होंगे। मिती भाद्र सुदी ६ शु० संवत् १९३७।

[दयानन्द सरस्वती]

जैन मत के ग्रन्थ जिस किसी छापेखाने बनारस वा कलकत्ते में संस्कृत वा भाषा के जितने जहां से मिलें भेज दो। और अलंकार के पत्र जो हम ने चंद्रालोप नामक लिखे हैं भीमसेन के पास होंगे। भेज देना जलदी।

---

(९) (१६७)

मुंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो।

आज वसियत नामा रमाना कर दिया । और ८) रुपैये पंडित अंबाशंकर के वावत वेदभाष्य के चौथे वर्ष के । और ८) रुपैये लाला रामशरण दास के वावत वेदभाष्य के चौथे वर्ष के। और १४) रुपैये बाबू छेदीलाल के बाबत वेदभाष्य के चौथे वर्ष के। और १२) रुपैये मुंशी रामशरण दास के बाबत वेदभाष्य के तीन वर्ष तकके। इन चारों का एक ही मिती में रुपया जमा हुआ। और एक ही मुकाम मेरठ है। मिती भाद्र

सुदी १२ बुध वा० संवत् १९३७ जानो। इन का नाम भी अगले वेदभाष्य में चाहो तो छपा देना। और ५४॥=)॥ रूपैया आर्य्यसमाज मेरठ से वर्णोच्चारणशिक्षा आदि पुस्तकों का मूल्य जमा हुआ। मिती भाद्र सुदी १२ बुध वार संवत् १९३७ को। हम कल ४ बजे की रेल में बैठ कर मुजफ्फर नगर जायंगे। चिठी पत्र वहीं भेजना होगा। हम ने तुमको कई वखत् लिख कर भेजा है कि जो पुस्तक जिस वखत छपकर तयार हो उसको उसी वखत जहां २ जितनी पुस्तकें जातीं हैं भेजदो। क्यों नहीं भेजते हो। हमको मालूम होता है कि जिस तरह मेला चांदापुर अभी तक यहां नहीं आया निश्चय है कि दूसरी जगह भी न पहुंचा होगा। यह बड़े अन्धेर की बात है। न जाने क्या होता है। हमने कह दिया है कि वेदभाष्य के साथ ही पहुंचा दिया करो। और पांच वा छः वेदभाष्य तो यहां से भेजे गये और ब्रजभूषण दास के यहां से भी आये थे। उनका दाम चिठी में क्यों नहीं लिखा। क्या तुमने अपना ही पास हिसाव लिखकर बैठ रहे। इससे हमको क्या मालूम है कितना बिका और कितना रहा। हम से यहां के पांच सात मनुष्य कह चुके कि हमने भ्रमोच्छेदन का पुस्तक मगाया है। अभी तक हमारे पास नहीं भेजा। हम कहते हैं कि यंत्रालय की आमदानी और बिक्री जितनी हो तिल भर का हिसाव साफ लिख कर भेजा करो। और अगले महीने से हिसाव हमारे पास मत भेजा करो। किन्तु परोपकारिणी सभा के मंत्री जो लाला रामशरण दास हैं। उन्हीं के पास एक नकशे में सब हिसाव यथावत् लिखकर भेजा करो। अभी से अपना हिसाव ठीक २

कर रक्खो ।* बहुत वार हम लिख चुके हैं कि जिस ने वेद भाष्य का चन्दा आज तक कुछ भी नहीं आया है उनके पास वेदभाष्य चौथे वर्ष के आरंभ से मत भेजना। ऐसा ही करना और उनके पास पत्र भी भेजो कि जब तक तुम चार वर्ष का चन्दा न भेजोगे तबतक तुम्हारे पास वेदभाष्य न भेजा जायगा। और उनके नाम छांटके हमारे पास भेजो कि जिनको हम अपने रजष्ट[र] के साथ मिला के ठीक करें। और जितनी सामग्री हमारे सामने और जितनी हमारे पीछे छापेखाने में आई है और जितना दाम लगा है जितना तोल वा गिनती जितने पुस्तकादि पदार्थ जमा वा खर्च तथा धन का भी हिसाब यथावत् लिखकर लाला रामशरणदास उपप्रधान आर्य्यसमाज मेरठ के पास भेज दीजिये। क्योंकि इस परोपकारिणी सभा के मंत्री उक्त लाला ही हैं। उन ने मुझ से हिसाब मागा था। मैंने कहा कि मुंशी जी देंगे। मेरे पास पूरा हिसाब नहीं है। श्यायद वे भी आपको इस के वास्ते लिखेंगे और आप उनके पास भेजभी देंगे।† हम आनन्द में हैं। आप लोग आनन्द में होंगे। मिती भाद्र सुदी १२ बुधवार संवत् १९३७ मु० (मेरठ)

[दयानन्द सरस्वती]



* यहां से आगे से लेकर अन्त की दो पंक्तियो से पहले तक सारा लेख ऋषि के अपने हाथ का लिखा हुआ है।

† ऋषि का निज लेख यहां समाप्त हो जाता है।

(१) ओ३म् (१६८)

बाबू छेदीलाल जी आनन्दित रहो।*

जो कागजात हम ने आगरे में बहुत पुरुष जो कि हिसाब के जानने वालों की संमति से निश्चित किया है। "वे उड़दू में तो वहां आप के पास है। और जो उन का नकल नागरी हमारे पास थी," वह सब आप के पास भेजते हैं। देख विचार ठीक कर जितने उस पर बाकी निकलें हुक्म लिखिये। उस फैसले में जो जो "उस ने" ख्यायानत के अपराध किये हैं वे भी लिख दीजिये। १ स्वामी जी से विश्वासघात करना। २—दूसरा हिसाब जैसा मैनेजर को रखना चाहिये वैसा न रखना। ३—तीसरा छापेखाने के स्वामी की आज्ञा के विना चोरी से अन्य के पुस्तकादि छाप के उसके लाभ का गमन कर जाना। ४—हिसाब देने में झूठ छल "कर" के "अन्यथा" व्यवहार करना। ५—हिसाब "न" देने "के लिये" झूठे हीले "किया" करना। ६—हिसाव देने के विना छापेखाने से चले जाना। ७—छापेखाने से जाते समय अपनी २० गठड़ियो को मास्तर शादीराम को दिखलाये विना "ले कर" चले जाना। इत्यादि जो २ हम ने इन कागजों पर लिखा है उस को विचारिये। ये सब कागज़ात वखतावर के रजष्टर आदि से जांच के लिखे हैं। और इस की नकल उड़दू में भी आगरे के

---

*इस पत्र को अनेक स्थलों पर श्री स्वा० जी महाराज ने स्वहस्त से शोधा है। कई स्थानों पर नयी पंक्तियां भी लिखी हैं।

" " इस प्रकार का चिन्हान्तर्गत सब लेख श्री स्वामी जी के अपने हाथ का लिखा हुआ है।

कागज़ों में थी। उसको आप लोगों ने क्यों न देख के फैसला कर दिया होता। अब न मुझ से और न बखतावरसिंह से पूछने की अपेक्षा करनी चाहिये। क्योंकि वख० तो ऐसा ही चाहता है कि यह मामला ऐसे ही घसड़ पचड़ होके रह जाय। इन बखतावर के कागजातों के देखने से निश्चित होता है कि ८०००) रुपयों से कम गमन और हानि बख० ने नहीं की है। आगे जैसा आप लोगों के ध्यान में आवे वैसा कीजिये। मैं यह आप लोगों से कहता हूं कि इस मामले में जैसा आप करेंगे वैसा ही मुझ को स्वकिार होगा। जो यह हिसाब लिखा है उस से कुछ कम डिगरी करनी चाहिये। अधिक नहीं। क्योंकि सत्य व्यवस्था होनी चाहिये। जो बख०सिंह के कर्म्म देखे जायं तो जितना उस पर दण्ड करे उतना ही थोड़ा है। परन्तु मुझ को आशा है कि आप लोग सत्य ही न्याय करेंगे। "अब जो हम ने जांच परताल कर उस के कागजात से बाकी रुपये उस से लेने जिस २ बाब[त] में जितने २ रु० निश्चित किये नीचें लिखते हैं।"

१०६०।) "ये रु० वे हैं कि" जो मासिक हिसाब हमारे पास भेजता था। और बाद इस के शादीराम ने जो मास २ में खर्च किया उन दोनों के मिलाने से जितने उस ने अधिक खर्च किये हैं।

६९७१।।।=) ये रुपये "वे हैं कि" जितने फर्मे मास्तर शादीराम ने अर्थात् किसी माह में १४ किसी में १५ और किसी में १६ छपवाये और उस बखतावर "सिंह" ने ७ फर्मों से अधिक किसी माह में नहीं छपवाये

और काम सरकारी आदमियों से रात दिन लेता था। चोरी से दूसरों के पुस्तक छपवाता था। जैसे कि ला रिपोर्ट, उस के दाम अन्य पुस्तकों के गिने हैं।

३००) ये रुपये "वे हैं जो कि उस ने" टैप आदि के जो कि छापेखाने में थे और कम सौंपे। शीशा सर्कारी, फौंडरी, टैप, और ढालने वाले भी सर्कारी थे। और कई एक चीजें वह ले गया। उनका तो पता ही नहीं। तौ भी ऊपर लिखे रु० निकलते हैं।

१४७-) "ये" रुपये "वे है कि" जो उसे सन्ध्यादि पुस्तकें सौंपी थीं और "जितनी उस ने दीं। जितनी का खर्च रजष्टर में उस ने लिखा है उस से जो 'बाकी" रहे उन का दाम इतने" निकलते हैं।

३५३॥।) "ये" रुपये "वे हैं कि जो" भूमिका के "पुस्तक" उसे सौंपी थीं उस के जमा खर्च से "बाकी" निकलते हैं।

४४२-) "ये" रुपये "वे हैं कि जो" ऋग्वेद के १२८६ अं-"क उस" को दिये "थे उससे कम दिये अर्थात् जितने उसने रज-[ष्ट]र मे खर्च में लिखे हैं उस से बाकी के हैं।" और

४९३॥।≋) "ये" रुपये "वे हैं जो कि" यजुर्वेद के १४३७ अंको के जमा खर्च देखने से उसी पर बाकी निकलते हैं।

सब मिलाकर

८९६८॥।≋)रुपये होते हैं।

ये सब रुपये उसी के हाथ के कागज़ादों से उसी पर निकलते हैं। वे कागज़ आपके पास "भी" हैं। और जो

उसकी नकल हमारे पास नागरी मे थी वह हम भेजते हैं। इसको भी आप लोग देख लीजिये। और इस की जाच पड़ताल उन्हीं रजस्टरादि से जो आपके पास हैं कर लीजिये। और उस के मासिक का रजस्टर अंगरेज़ी में है। उसकी नकल भी फारसी में करवा के उस में रखी थी। और सब महीनों की चिट्ठियात भी माहवारी नम्बरवार हमने आगरे में करा के उन्हीं कागज़ों में रक्खी हैं। उसमें भी इस ने "जो" जमा नहीं किया है वह हमने नहीं छाटा। "उन चिट्ठियों को" आप लोग वहां जाच कर लीजिये। "इस* से उसकी बहुत सी चोरियां पकडी जायंगी। आगे जो आपने थियोसोफीष्ट भेजा नोटिस देखने के लिये, सो देखा। क्या किया जाय जिनके लिये उपकार करते हैं, वे ही उलटे विरोध ही करते जाते हैं। अच्छा जो दुष्ट दुष्टता को नहीं छोडते तो श्रेष्ठ श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें। ये का[ग]जात आप के पास इस लिये भेजे हैं कि लाला रामशरण दास जी नागरी नहीं पढ़े हैं। इनको आप देख के उन को समझा दीजिये। और सबसे मेरा आशीर्वा[द] कहियेगा। यहां वर्षा बहुत हुई है। प्रतिदिन यहां राज महल में व्याख्यान होते हैं। राजा आदि सब लोग अति प्रीति से सुनते हैं। अब जैसे बने वैसे यह मामला शीघ्र कर दीजिये। किमधिकेन व्यवहारज्ञेषु। मि० श्रा० व० ९ मंगलवार

[दयानन्द सरस्वती]

(मसूदा) जिले अजमेर।

इसका उत्तर शीघ्र भेजियेगा।"

*यहां से लेकर अन्त तक सारा पत्र श्री स्वामी जी के अपने हाथ का है।

हिसाब कलकत्ते का जो बख़तावरसिंह ने किया।*

७५) हवाले जादोनाथ पेशगी वास्ते ख़रीद करने १ मन डबल ग्रेट। १ मन २८ सेर डबल पीका नागरी। २॥ मन सीसा। १५ सेर काइटेशन। साढे बारहसेर काडरेस्त। ता० रसीद ३० दिस० स० ७९।

---

५०) रसीद तारीख़ ३० दिस० १८७९

८००।≈)||| रसीद नम्बरी ६०२ पार्कर को० ता० ३ जनवरी १८८० कलकत्ता बाबत ख़रीद

रायल प्रेस	१	६००)
,, प्रोच सैट	२	४॥) दर २।)
उमद बारीक कम्बल	१	३।)
कम्बल मोटा	१	४॥)
रायल रूलर फ्रेम	१	६।.।)
ज़ाब	१	२॥)
रब कटर	१	
	१३२	९९
	,,	१८।≈)|||
	,,	२३।)
ख़र्च बंधवाई		२०)

---

७०) हवाले बिहारी लाल दत्त पेशगी बाबत ख़री[द] ३ मन ग्रेट पराईमर दर ४०) मन। ता० १ जन १८८०

---

* ला० छेदीलाल जी को लिखे पूर्वमुद्रितपत्र के साथ इस हिसाब का सम्बन्ध है। इस पर श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से छः नोट दिये हैं। वे पत्र में छाप दिये हैं।

२९०।)॥ बाबत कीमत कागज़ दो गट्ठे २०×२४ पौंड कीमत
२९२≈) डिलेवरी चार्च १) कुल २९३≡) कमिशन
२॥=)॥। बाक़ी २९०।) ता० ३ जन० १८८०

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा नोट १]

"यह भी रसीदें कलकत्ते की हैं। इन से भी प्रेस की चीजों का भाव आगम और खर्च विदित हो जायगा।"

२९।) बाबत रूलर मोल्ड केशसेल जान डि० कं० ता० ५ जन १८८०।

५०॥।≈)४ रसीद जा० डि० कं० ३ जन० १८८०

२ ब्रास रूलर	६
१ तथा	२॥)॥
१ तथा वार्निश	२॥)॥
१० टिन काली स्याही नं० ३	१७॥) दर १॥)
१० तथा	५) दर ।।)
५ इंगलिश बोर्डर नं ५०	७।)४ दर १।≈)
बोर्डर नं० ६३	६।≈)॥ दर १॥-)४
१ चेक नं० ११६५	१॥०)॥
बंधवाई आदि	२)

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा नोट २]

"यह लेख इस लिये है कि प्रेस की हर एक चीज का भाव विदित हो सके। इससे कितनी चीजें छापेखाने में उसने सौंपीं और कितनी उड़ा ले गया।"

१४१।-) रसीद पोस्ट आफ़िस नं० १६८ ता० ९ अक्टूबर
१८८० अधर चंद्र टाइप फौंडर

---

१२५) टाइप फ़ौंडर जान डिकिंशन से दिलाए १० सि० १८८०

१६३१॥≡)४ मीजान
जो बखतावरसिंह ने कलकत्ते भेजा प्रथम स्वामी
जी से लेकर १५०—०
दूसरे तथा १४८

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा नोट ३]

"इतने रुपैयों को मुझ से लेके कलकत्ता में खर्च किया वख० ने। इस से अधिक जितने कल* कलकत्ते में भेजे वे अभयराम चुन्नीलाल की दुकान से भेजे थे। उसने इन रुपैयों में से वहुत सी सामग्री अपने छापेखाने की है।"

रुपया जो कि बखतावरसिंह ने कलकत्ते भेजा।

२९ जनवरी १८८० को स्वामी जी से लेकर	३२७)
२ फरवरी १८८० को तथा	१५००)
माघ ब० ४ सं० १९३६ तथा	२९३)
	२१२०)
अप्रेल मास में उस के रजिस्टर के अनुसार	४०)
मई	१००)
जून	२००)
अगस्ट	२५१।)
सितं०	५४६।-)
	११३७॥-)
कुल मीज़ान	३२५७॥-)

---

* दो वार लिखा गया है।

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा नोट ४]

"यह वह हिसाब है कि उस ने कलकत्ते में कितने रुपैये भेजे। इनसे क्या२चीजें आई। इनमें कि[तनी] वर्तमान हैं। कितनी खर्च हुई। और कितनी उस ने छापेखाने सौंपी। जो सौंपी वे कितने दाम की हैं। कौन चीज खर्च हुई। और कितनी उसने गमन की। इस का निश्चय आप लोग करें उस से कि जो उस ने मास्तर शादीराम को उस ने जाती वखत सौंपी। उनका मूल्य का निश्चय रसीदों से कीजिये कि कौन चीज कितनी मूल्य की है।"

वहां पर ३२५७॥-) भेजा और रसीदें १६६१॥। ≡)४ की मौजूद हैं।

और ६७७॥।=)॥। के बिल हैं।

बिलों की रसीदें नहीं। रसीदों के बिल नहीं।

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा नोट ५]

"इस से यह ठीक आपको विदि[त] हो जायगा कि उस ने कलकत्ते के हिसाब में कितने रुपैये उडाये लिये हैं और बिल के रुपैयों की पहुंच की रसीद न होने और रसीदों के बिल न होने से जालसाजी उसकी विदित हो जायगी। और उस[की] चिट्ठियों से निश्चित है कि कलकत्ते का हिसाब चूकता कर दिया, तो बिल का होना और रसीदों का न होना सिवाय चोरी के क्या कह सकते हैं।"

बिल जो कि बखतावरसिंह ने किताब में चसपां किया और उनकी रसीद नहीं है॥

१३२) बिल जान डिकि० कम्पनी तारीख २६ मई १८८०
१ बंडल कागज २० पौंड कीमत १३२॥-) डिलेवरी चार्जे ॥) कुल १३३।-) कमीशन १।-) बाकी १३२)

१३२) बिल जा० डि० कं० ता० ९ अग० १८८०
१ बंडल कागज कीमती १३२॥-) डिलेवरी चार्जे ॥) कुल १३३।-) कमीशन १।-) बाकी १३२)

१२६॥≡)॥ बिल जा० डि० कं० २६ जन० १८८०
१ बंडल कागज़ १० रिम वजनी ४८० पौंड कीमती १२७॥) मिनहा बाबत डिसकोंट १))। बाकी १२६≡)॥ जमा किया डिलेवरी चार्जे १॥) कुल १२८॥≡)॥

२५३।≡)। बिल जा० डि० कं० ६ सित० १८८० २बंडल २० रिम वज़नी ९६० पौंड दर))। फी पोंड कीमत २५५) डिसकोंट २॥)॥ बाकी २५२।≡) डि० चार्ज १) कुल २५३।≡)।

३॥) बिल बाबू व्रजभूषणदास कम्पनी २॥) कीमत संहिता यजुः १) कीमत सर्वदर्शनसंग्रह १८ अक्ट० १८८०

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा नोट ६]
"ये रसीदें का तर्जमा है। इन रसीदों में से कई एक रसीदें फाड भी ली है। और कितनी एक रसीदें चिपकाई भी नहीं। हिसाब कोई न कर सके इस लिये यह काम उस ने किया।"

(१) ओ३म् (१६९)

ता० २२ मार्च

लाला कालीचरण रामचरण जी आनंदित रहो। हम प्रसन्नता पूर्वक जयपुर में पहुंच के गंगापोल दरवाजे के बाहर वदनपुरा में अचरोल वाले ठाकुरों के बाग़ में ठहरे हैं। और आज पंडितो के विषय में जो १००) रु० वहां से आये थे, उनका हिसाब सेठ निर्भयराम की दुकान पर भेजते हैं। अब मार्च की ता. १ तक हमारे पास २) रु. बाकी रहे हैं। इस लिये आप १००) रु० की हुंडी करवा के जयपुर में हमारे पास शीघ्र भिजवा दीजिये। हम आगरे से चल के भरतपुर में १० दिन रहे। और वहां से चलके ५ रविवार को यहां पहुंचे। हम सब प्रकार प्रसन्न हैं। आप लोग भी होंगे। सब से हमारा नमस्ते कह देना।

दयानन्द सरस्वती

(२) ओम् (१७०)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो। विदित हो कि आज ४ वा ५ दिन व्यतीत हुए हैं, हम उदयपुर में आके नौलखा बाग के महल में ठहरे हैं। यहां सब प्रकार आनन्द मंगल है। बहुत दिन हो गये हैं, अभी तक 'आर्य प्रश्नोत्तरी' के उत्तर नहीं छपवाये क्या कारण है। जो प्रेस एक्ट की शंका हो तो देखत पत्र के पण्डित मुन्नालाल मन्त्री आर्यसमाज अजमेर के पास भेज दीजिये। वे छाप देंगे। इस विषय में पत्र भी आज उन के पास भेज दिया है। जो छप चुकी हो तो शीघ्र विदित करो।

गोरक्षार्थ कितनी सही हो चुकी । इस का भी उत्तर लिखना । इस समय (आर्यभाषा के) राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ जो मोमरियल छपे हैं सो शीघ्र भेजना । और आप लोग भी जहां तक हो सके गोरक्षार्थ सही और आर्य-भाषा के राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिये। और फर्रुखाबाद के आर्यसमाज तथा पाठशाला का जैसा वर्तमान हो लिखना। और हम भी जो कुछ विशेष यहां का समाचार लिखने योग्य होगा लिखेंगे।

१४ अगस्त सन् १८८२ ई०

[दयानन्द सरस्वती] उदयपुर

(३) (ओम्) (१७१)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित रहो कि पत्र तुम्हारा आया । समाचार मालूम हुआ । तुम ने 'आर्य प्रश्नोत्तरी' के उत्तर अजमेर पण्डित मुन्नालाल जी के पास भेज दिये। अच्छा किया । अब वे शीघ्र छाप डालेंगे। विद्यार्थियों को निम्नलेखानुसार ग्रन्थ पढ़ना पढाना चाहिये। कि प्रथम क्रम से वेदाङ्गप्रकाश पढ़वाना । फिर वैदिक निघण्टु। फिर पिङ्गल सूत्र। पश्चात् काव्य की रीति से मनुस्मृति । इत्यादि ग्रन्थ जब पढ़ चुकें तब आगे पूंछ लेना। और हम यहां आनन्द मंगल से हैं। आशा है कि परमेश्वर की कृपा से तुम भी कुशल युक्त होगे । सब से हमारा आशीर्वाद कह देना। द्वितीय श्रावण शुदी १० गुरु सम्वत् १९३९।

[दयानन्द सरस्वती ।

[राज मेवाड उदयपुर]

(१) (१७२)

राजा दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

आपका कार्ड आया। समाचार विदित हुए। जयपुर में कुछ थोड़ा सा संस्कार हो गया है। और अजमेर में छोटा सा आर्यसमाज नियत हो गया है। ईश्वर करे इसकी वृद्धि हो। हम तारीख २३ जून गुरुवार को यहां से मसूदा को जो अजमेर से १२ वा १३ कोस है जायंगे। क्योंकि वहां के राव साहब ने बडी प्रीतिपूर्वक निमन्त्रण किया है। वहां अधिक १५ दिन तक रहेंगे। आम भेजें तो गादर वा कुछ कच्चे से भेजिये। जिस्से यहां पर पकते रहें। क्योंकि पहिले आम जो काशी से आये थे थोडे काल में अकसर बिगड गये थे। सो अब एक ही वार भेज दीजिये। क्योंकि वार वार तकलीफ होती है। पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक २ होना चाहिये। जैसे मिशन स्कूलों में लडके अपने अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिये वाईविल सुन लेते हैं और कुछ ध्यान नहीं देते वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा। इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है उस्की ही वृद्धि होना चाहिये। वरन फारसी का होना कुछ अवश्य नहीं। केवल संस्कृत और राज भाषा अंगरेजी दो ही का पठन पाठन होना अवश्य है। सो आधे आधे समय दोनों जारी रहें। और दोनों की परीक्षा भी माहवार बडी सावधानी और दृढ नियम के साथ हुआ करे। और दोनों की ही अपेक्षा से कक्षा वा नम्बर की वृद्धि विद्यार्थियों की हुआ करे। और हम को सदैव परीक्षा पत्र भेजा करो। विशेष कर संस्कृत के विद्यार्थियों के माहवार

पठन का व्यौरा और किस कक्षा में कौन २ पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, कितनी २ हुई, यह सब सूचना दिया करो। किमाधिकम् विशेष फिर आप को लिखेंगे।

मिती आषाढ़ वदी ६ सम्वत् १९३८ ता० १७ जून १८८१ ई०।

ह० दयानन्द सरस्वती

अजमेर

(२) ओ३म् (१७३)

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

आप उस प्रश्नोत्तरी के उत्तरों को ले के पण्डित मुन्नालाल मन्त्री आर्यसमाज अजमेर के पास देखत पत्र के भेज दीजिये। अथवा जो अगले भारतसुदशाप्रवर्तक के अंक में छपने का प्रारम्भ हो गया हो तो कुछ चिन्ता नहीं। दूसरी अति शोक करने की यह बात है कि आज काल सर्वत्र अपनी आर्यभाषा के राजकार्य में प्रवृत्ति होने के अर्थ (भाषा के प्रचारार्थ जो कमीशन हुआ है) उसमें पंजाब हाथा आदि से मेमोरियल भेजे गये हैं। परन्तु मध्यप्रान्त फर्रुखाबाद कानपुर बनारस आदि स्थानों से नहीं भेजे गये। ऐसा ज्ञात हुआ है। और* और गत दिवस नैनीताल की सभा की ओर से एक इसी विषय में पत्र आया था। उसके अवलोकन से निश्चय हुआ कि पश्चिमोत्तर देश से मेमोरियल नहीं गये। और हम को लिखा है कि आप इस विषय प्रयत्न कीजिये। अब कहिये हम अकेले सर्वत्र कैसे घूम सकते हैं। जो यही एक काम हो तो कुछ चिन्ता नहीं। इस लिये आप को अति उचित है कि

* दो वार लिखा गया है

मध्य देश में सर्वत्र पत्र भेज कर बनारस आदि स्थानों से और जहां २ परिचय हो सब नगर वा ग्रामों से मेमोरियल भिजवाइये। यह काम एक के करने का नहीं। और अवसर चूके वह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ तो आशा है कि मुख्य सुधार की एक नीव पड़ जावेगी। आप स्वयं बुद्धिमान् हैं। इस लिये विशेष लिखना आवश्यक नहीं। और गोरक्षार्थ कितनी सही हुई है। इस विषय में ध्यान देना अवश्य है। बड़े हर्ष के ये दोनों विषय प्रकाशित हुए हैं। इस लिये जहां लों हो सके तन मन धन से सब आर्यों को अति उचित है इन दोनों के सिद्ध करने में प्रयत्न करें। वारंवार ऐसा ही निश्चय होता है कि ये दो सौभाग्यकारक अंकुर आर्यों के कल्याणार्थ उगे हैं। अब हाथ पसार न लेवे तो इस से दुर्भाग्य दूसरी क्या बात होगी। अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु। लाला निर्भयराम से हमारा आशीर्वाद कहियेगा। शुद्ध श्रावण शुक्ल ३ बृहस्पति सम्वत् १९३९।

(उदयपुर)

दयानन्द सरस्वती

(३) (१७४)

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

नाटक का विषय नाममात्र भी भारतसुदशाप्रवर्तक में न छपना चाहिये। नाटक तमाशे का है। क्योंकि तुम्हारे नाटक को देख के लखनौ के समाज में नाटक का व्याख्यान ही होने लगा। जब हमने मने किया तो कहने लगे कि आप के फर्रुखाबाद समाज के पत्र में नाटक क्यों छपता है। यह नाटक से बिगाड़ का उदाहरण है। और पाठशाला में संस्कृत

पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुये। अथवा अंगरेजी फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है। सो लिखो। जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रक्खी जाय। सबसे हमारा आशीर्वाद कह देना। मि० मार्ग वदी १४ शनिवार सम्वत् १९३९।

यह रुक्का सेठ निर्भयराम जी को देके १२) रु० मंगवाकर हर्जू कहार के लड़के रामदीन को दिला देना। और वहां के मुनीम से कहना कि रु० देने में देर न करे।

ह० दयानन्द सरस्वती
उदयपुर

(४) ओ३म् (१७५)

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि कहार और रसोईया तथा शोधक और कोषाध्यक्ष के लिये आप को लिखा था। उस का उत्तर आपने लिखा कि ४ दिन के पश्चात् इसका निश्चित उत्तर भेजेंगे। सो वह आज तक नहीं आया। बीच में पण्डित लक्ष्मीदत्त जी ने उत्तर दिया था कि आप बरेली को गये हैं। हम ने आपके पत्र का उत्तर लिखा था कि वह रामनाथ कौन है क्या पढा है। और नागरी लिखना जानता है वा नहीं। और हमारे साथ कब रहा था। कौन वर्ण है। कहां का रहने वाला है। और मुरादाबाद वाले के लिये लिखा था कि जब तक बड़ा हानिकारक अपराध न करे न निकाला जायगा। सो भी आपके आधीन निकालना वा रखना रहेगा। सो आज पर्यन्त तुम्हारा उत्तर नहीं आया। सो शीघ्र भेज दीजिये। और दोनों पुरुष वैदिक यन्त्रालय में भेजने के लिये पूर्ण यत्न कीजिये। क्योंकि

अकेले समर्थदान से वहां का काम नहीं चल सकता। आपके लिखे प्रमाण आर्यसमाज लाहौर के मन्त्री के पास सब समाचार भेज दिया। और हम आज चित्तौर गढ में हैं। आगामी फाल्गुन वदी चतुर्दशी गुरुवार के दिन राजस्थान शाहपुर मेवाड को जाकर यथारुची वहां ठहरेंगे। अब उदयपुर का वृत्तान्त सुनो। हम वहां बहुत आनन्द में रहे। नित्य प्रति श्रीमान् महाराणा जी की ओर से सेवा उत्तम रीति से होती रही। किसी दिन को छोड़ सब दिन तीन चार वा पांच घण्टे तक मुझ से मिल कर प्रेम पूर्वक सतसङ्ग किया करते थे। केवल सुनने मात्र नहीं किन्तु उस का धारण और आचरण भी करते हैं। छः शास्त्रों का विषय मुख्य २ मनुस्मृति के राजधर्म विषयक तीनों अध्याय विदुरप्रजागर आदि के उपदेश के योग्य श्लोक, थोड़ा व्याकरण का विषय, और थोड़ी सी अन्वय की रीति श्रीमानों ने मुझ से पढ़ी। और राजधर्मों में तत्पर थे। और विशेषकर अब पूर्ण रीति से हुये। वेश्या आदि का नृत्य दर्शनादि नहीं सा निर्मूल कर दिया। स्वीकारपत्र जिसे वसीयतनामा कहते हैं वह उदयपुर में श्रीमानों ने स्वीकृत स्वमुद्रांकित स्वहस्ताक्षर स्वभूषित करके* उस लिखी हुई सभा के उदयपुराधीश सभापति हुये हैं। उस का विशेष समाचार तुम को छपने पर विदित होगा। एक मान्य पत्र मुझको दिया है। और रु० १२००) कल्दार वेदभाष्य के सहायार्थ और एक दुशाला और एक साधारण दुशाला। और १०० कल्दार रामानन्द ब्रह्मचारी को। तथा ५०० कल्दार फीरोजपुर आये-

* यहां कुछ पाठ रह गया प्रतीत होता है।

समाज के अनाथालय के लिये। और १०० कल्दार उस में कसीदा करने वाली लड़कियों को पारितोषिक प्रदान किये। वैदिक धर्म पर प्रथम ही रुची थी। अब विशेष हो गई। जैसे श्रीमान् आर्यकुलदिवाकर सुशीलता सत्यता कृतज्ञता सुसभ्यता पुरुषशीलतादि शुभगुण कर्म स्वभावयुक्त मैंने देखे वैसे बहुत विरले होंगे। अब हम इस वक्त चित्तौड़ में हैं। फाल्गुन वदी चतुर्दशी गुरुवार के दिन राजधानी शाहपुरा राज्य मेवाड़ जाकर ठहरेंगे। जो कुछ पत्रादि भेजो सो इस पते से भेजना। ता० ४। ३। ८३ ई०। मिती फाल्गुन वदी १० मी सं० १९३९

दयानन्द सरस्वती

(३) (१७६)

श्रीयुत देशहितैषी सम्पादक समीपेषु। मान्यवर नमस्ते। विदित होय कि एक पत्र मुन्शी इन्द्रमणि जी के विज्ञापन रूप मेरे पास आया। इस का उत्तर बहुत लम्बा है। परन्तु इस समय इस पत्र के थोडे से उत्तर को आप अपने पत्र में स्थान देकर मुझ को कृतार्थ कीजिये। यदि मुन्शी इन्द्रमणि जी अपने लेखानुसार सच्चे हों तो उस व्यवहार में अन्यत्र से जितना आय व्यय हुआ हो आपके पत्र (दे० हि०) में छपवा के प्रसिद्ध करैं। और इसी प्रकार लाला रामशरन दास जी भी। जिस के देखने से सज्जन लोगों को स्वयं सत्यासत्य का विचार हो जायगा, अर्थात् समझ लेंगे। और उसी हिसाब के नीचे यह भी लिखा हो कि जिस २ भद्र आर्यजन ने मुन्शी जी और मुसलमान मुरादाबाद के झगडे में जितने रुपये जिस २ के पास भेजे होवें और जिस २ की रसीद भी

उन के पास हो नाम लेख पूर्वक वह २ देशहितैषी पत्र सम्पादक के पास भेजें। और उस २ के पत्र को आप अपने पत्र में छाप कर प्रसिद्ध कर दिया करें। जिस से सत्य और असत्य सब साम्हने प्रकाशित हो जाय। इस में सत्य तो यह है कि मुंशी जी जो झूंठा अपराध स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और लाला रामशरणदास रईस मेरठ के ऊपर आरोपित करते हैं, वह सब अपराध मुन्शी जी का है। क्योंकि जब मुंशी जी पर मैजिस्ट्रेट मुरादाबाद ने ५००) रु० दंड किये थे उसके पश्चात् मुंशी जी मेरठ में आये (जहां उस समय स्वामी जी भी उपस्थित थे) और कहा कि यह विवाद सब वेदमतानुयाइयों के ऊपर समझना चाहिये, न केवल मुझ पर। इस पर स्वामी जी और अन्य सब सज्जनों ने कहा कि यह ठीक है। क्योंकि मुंशी जी ने वेदमत की रक्षा के लिये इतना बड़ा परिश्रम किया है। इसलिये इस समय इस मामले में सब वैदिकों को सहाय करना उचित है। इसपर सब की यही सम्मति हुई कि इस बात के लिये एक सभा नियत हो और चन्दा इकट्ठा करे। जिस से उस के आय व्यय का हिसाब वह सभा रक्खे। और मुंशी जी को उस में से इतना धन दिया जाय कि जितना खरच होना उचित होय। अंत को यह सभा मेरठ में नियत हुई और मुंशी जी से कहा कि जो कोई आप के पास रुपये भेजे उन को आप भी इस सभा के कोषाध्यक्ष लाला रामशरणदास जी के पास भेज दिया करें। और उस के आय व्यय की परताल (जांच) यह सभा किया करे और हिसाब भी लेवे। इन सब बातों को मुंशी जी ने भी स्वीकार स्वामी जी आदि के सन्मुख किया था। और यह भी उसी

समय निश्चय हुआ था कि सिवाय उस सभा के सभासद के दूसरे से उस धन का आय व्यय वा संख्या प्रसिद्ध तब तक न करनी चाहिये कि जब तक यह कार्य पूरा न हो जाय। यदि चंदे का धन कम आवे और खर्च अधिक करना होय तो किसी योग्य धनाढ्य पुरुष से सभा उधार लेकर कार्य्य करे। इसी लिये लाला रामशरणदास जी ने जमा धन की संख्या मुंशी जी को नहीं बतलाई थी। क्योंकि सभा की आज्ञा बतलाने की नहीं थी। इस गुण को मुंशी जी ने दोष समझा। धन्य है मुंशी जी की बुद्धिमत्ता को। इससे सब सज्जन लोग समझ सक्ते हैं कि यह मुन्शी जी को संख्या न बतलाने में लाला रामशरणदास जी का दोष है। वा इस पर क्रोधित होकर यथा तथा कुवाच्य कहने लिखने में मुंशी इन्द्रमणि जी का। इस विपरीत व्यवहार का कारण यह विदित होता है कि जब इधर उधर से बहुत धन मुंशी जी के पास आने लगा तब लोभ के वश में होकर जो पूर्वकृत नियम अर्थात् जितना धन मुंशी जी के पास आवे वह मेरठ सभा के कोषाध्यक्ष लाला रामशरण दास जी के पास तो भेजना दूर रहा किन्तु जब लाला राम-शरण दास जी ने कई वार पत्र भेज कर हिसाब मांगा तो मुंशी जी ने मौन साध के हिसाब नहीं दिया तब लाला राम-शरणदास जी को निश्चय हुआ कि मुंशी जी के मन में कुछ अन्य आशय है। इस बात के निश्चयार्थ लाला श्यामसुन्दर रईस मुरादाबाद के पास लाला रामशरणदास जी ने पत्र भेजा कि मुंशी जी से हिसाब पूछ कर मेरे पास भेजो। उनको भी मुंशी जी ने हिसाब नहीं दिया। किन्तु इस सर्ववैदिक मत के रक्षार्थ धन को अपना निज धन ही समझ लिया। जब से

लाला रामशरणदास जी ने मुंशी जी को धन देना बंद किया और स्वामी जी को पत्र द्वारा विदित किया तब स्वामी जी ने उत्तर दिया कि इस समय इस बात के होने से कार्य्य में विघ्न होगा,कार्य होने दीजिये। और ६००) रु० जो मांगते हैं दे दीजिये। तब उन्होंने देदिये और इससे अधिक धन मुंशी जी को कितना दिया और कितना लाला रामशरणदास जी के पास जमा रहा यह बात हिसाब छपने से सब को प्रसिद्ध हो जायगी। और स्वामी जी ने उक्त लाला श्यामसुन्दर कोठी वाले रहीस मुरादाबाद के पास पत्र भेजा कि मुंशी जी से हिसाब लेकर लाला रामशरणदास जी के पास भिजवा दीजिये। उन्होंने उत्तर दिया कि मुंशी जी हिसाब तो नहीं बतलाते किन्तु इस विषय में पूछा जाता है तो कुछ भी नहीं कहते। धन्य रे धन, तेरे में बड़ी आकर्षण शक्ति है, कि तू बड़ों २ को भी धर्म से डिगा कर नीचे गिरा देता है। जब देहरेदून से आते समय मेरठ के स्टेशन पर लाला रामशरणदासादि से मेल हुआ तब मुंशी जी के विषय की बात सुन बड़ा आश्चर्य मान के उन से (स्वामी जी ने) कहा कि मैं कोयल इसीलिये ठहरके वहां मुंशी जी को बुला कर समझा दूंगा। स्वामी जी ने कोयल में आकर मुंशी जी को बुलाने के लिये तार दिया। उसके उत्तर में मुंशी जी ने तार मे ख़बर दी कि मैं बीमार हूं। नारायण दास प्रयाग को गया है। अर्थात् मैं नहीं आसकता। पश्चात् स्वामी जी ने आगरे में आकर मुंशी जी के पास पत्र भेजा कि यदि यह बात सत्य है तो इस में आपकी बड़ी निन्दा होगी। आप यहां शीघ्र आइये। मुंशी जी ने बहुत क्रोधित होकर असभ्यता की बातें जो कि उनके लिखने के योग्य न थीं लाला

रामशरणदास जी की निन्दापूर्वक बहुत सी लिखीं। और यह भी उस पत्र में लिखा कि आप लाला रामशरणदास जी से हिसाब मंगवाइये। स्वामी जी ने तब लाला रामशरणदास जी को लिखा कि आप हिसाब लिख कर मेरे पास यहां भेज दीजिये। जब मैं आप के हिसाब को मुंशी जी को दिखला दूंगा तब वे भी अपना हिसाब देंगे। इस के थोडे ही दिनों के पश्चात् मुंशी जी तथा लाला जगन्नाथ दास जी आदि मथुरा होते हुए आगरे में स्वामी जी के पास आये। जब स्वामी जी ने उन से कहा कि हिसाब लाये हो या नहीं तब मुंशी जी ने कहा कि हां लाये हैं। परन्तु पहले लाला रामसरन दास जी का हिसाब मंगवा लो तब हम भी दिखा देंगे। तब स्वामी जी ने कहा कि जब आप के पास हिसाब है तो क्यों नहीं दिखलाते। तब पुनः मुंशी जी और लाला जगन्नाथदास जी ने कहा कि उन का हिसाब आने दीजिये तब दिखलावेंगे। पाठकगणों! परमेश्वर की कृपा और लाला रामशरणदास जी की सच्चाई से दूसरे ही दिन मेरठ से हिसाब आ गया। स्वामी जी ने मुंशी जी तथा लाला जगन्नाथदास जी को दिखला दिया। पश्चात् स्वामी जी ने कहा कि अब तुम दिखलाओ। तब मुंशी जी के कहने से लाला जगन्नाथदास जी ने वैग को हाथ लगाया। इधर उधर हाथ फेर कर कहा कि वह हिसाब का कागज़ तो मैं मुरादाबाद ही में भूल आया। सभ्यगणों! देखो! क्या मिली हुई गुरु चेले की भक्ति है। तब स्वामी जी ने कहा कि जितना आप को स्मरण होय उतना ही कण्ठ से लिखवाइये। तब मुन्शी जी लिखाने लगे। अनुमान है कि २०००) दो हज़ार तक का हिसाब तो लिखवाया। और कहने लगे कि अब मुझे याद नहीं है। हम

मुरादाबाद पहुंच कर शीघ्र हिसाब भेज देंगे। सो आज तक नहीं भेजा। अब आप लोग इन बातों से विचार लेंय कि मुंशी जी सच्चे हैं वा लाला रामशरणदास जी।

तब मुंशी जी और लाला जगन्नाथ जी व्यर्थ वितंडावाद करने लगे। और कहा कि जो २५०) रु० लाला वल्लभदास जी ने भेजे थे सो इस हिसाब में जमा क्यों नहीं। तब स्वामी जी ने कहा कि वे रुपये तो गुरदासपुर में मेरे नाम आये थे। मैंने लाला रामसरनदास जी को दिये थे। न जाने उन्होंने जमा क्यों नहीं किये। इसका समाचार मैं लिखकर मंगवा दूंगा। स्वामी जी ने उसी दिन लाला रामसरनदास जी को पत्र लिख उत्तर मंगवाया। तब उन्हों ने लिखा कि यह मेरे मुंशी की भूल से लाहौर के रुपयों के साथ गुरदासपुर के भी २५०) रु० जमा लिखे गये हैं। अर्थात् जिस दिन १५०) रु० लाहौर समाज से आये थे। उसी दिन २५०) के नोट आपने भी दिये थे। भूल से ४००) रु० लाहौर समाज के नाम जमा किये गये हैं। अब मुंशी जी इस का निश्चय करें वा करावें अर्थात् इन २५०) रु० के सिवाय किसी ने स्वामी जी के पास रुपया नहीं भेजा। यदि भेजा हो तो जिस के पास स्वामी जी के हस्ताक्षरी रसीद होगी, भले ही प्रसिद्ध से छपवा देवे। किन्तु स्वामी जी की कुछ इस में बिपरीत बात हो तो स्वामी जी प्रतिज्ञा पूर्वक कहते हैं कि सिवाय २५०) रुपयों के मेरे पास एक कौड़ी भी किसी की नहीं आई। क्योंकि जो कोई स्वामी जी से पूछता वा पत्र भेजता था तो स्वामी जी यही उत्तर देते थे कि जो भेजना हो सो लाला रामशरणदास जी के पास मेरठ सभा को भेजो।

क्योंकि उसी सभा के आधीन यह सब प्रबन्ध है। इस उत्तम प्रबन्ध को तोड़ने वाले मुंशी जी हैं, कि जिन्होंने भारतमित्रादि समाचारों में अपना मतलब सिद्ध करने के लिये अंड बंड छपवा कर स्वप्रयोजन सिद्ध किया। और अपनी प्रशंसा पर बट्टा लगाया। शोक है कि यह धन बुरी बला है, जो बड़े २ चतुरों को भी फंसा लती है। उसी दिन स्वामी जी ने मुंशी जी से कहा कि हिसाब ठीक २ मेरठ सभा में भेज दीजिये। जो एक नियम हुआ है उसका तोड़ना अच्छा नहीं। आप पूर्वकृत नियमानुसार वर्तिये, जिस से प्रीतिपूर्वक सब सहायक रहें, इसी में अच्छा है। विरोध होना अच्छा नहीं। तब तो मुंशी जी और लाला जगन्नाथदास जी दोनों क्रोधाविष्ट होकर कहने लगे कि हम से हिसाब लेने वाला कौन है। इस के मालिक हम हैं। हमारे पर यह सब मामला चला है। हमारे नाम चन्दा आता है। जो आता है हमारा ही है। और लाला जगन्नाथदास जी बोले कि यदि आप से कोई वैदिक यन्त्रालय का हिसाब पूछे, क्या आप देंगे? स्वामी जी ने कहा कल्ह लेते आज ही लो। यहां कोई बात गुप्त नहीं। किन्तु जब कोई आर्य्यसमाज का प्रतिष्ठित सभासद हिसाब लेना चाहे उसको कोई अटकाव नहीं है। तब स्वामी जी ने मुंशी जी को एकांत में ले जाके समझाया कि ऐसी बात करना आप को उचित नहीं है। एक तो वह बात थी जो मेरठ में आपने कही थी कि यह सब वैदिक धर्म वालों का मामला है। मेरा अकेले का नहीं और इस से विरुद्ध आज की बात है कि मेरे ही अकेले का मामला आदि है। सुनिये मुंशी जी यदि मैं आप को पहले से ऐसा जानता तो आपके साथ एक क्षण

मात्र भी न ठहरता । और आपका कुछ भी समर्थ नहीं था कि अकेले इस प्रकार सहाय प्राप्त कर सकते । अस्तु मैं तो उसी बात को समझा हूं कि यह सब वैदिकमतानुयायियों के साथ की बात है । तब तो मुन्शी जी कुछ शान्त हुए । तब स्वामी जी ने कहा कि अब शेष कार्य्य आप सिद्ध कीजिये । और प्रयाग में एक दो पुरुषों का नाम लिखवाया कि उनकी सम्मति से सब काम कीजियेगा । और मुरादाबाद पहुंच के हिसाब मेरठ में शीघ्र भेज दीजियेगा । मुन्शी जी ने कहा कि जाते ही भेज दूंगा । सो भी न किया और न हिसाब भेजा । करते और भेजते तब, जब उन के मन में शुद्ध भाव होता । किन्तु वहां प्रयाग में भी गुप्त व्यय कर कराके जैसा कि मुरादाबाद जजी में व्यय व्यवस्था हुई थी वैसी ही प्रयाग से करा अपनी नीयत का फल पाकर चले आये । फिर भी न जाने किस २ सज्जन पुरुष के पुरुषार्थ से श्रीमान् गवर्नर जनरल साहब बहादुर से प्रार्थना कर के १००) रु० का दण्ड भी माफ कराया गया । यदि अब भी मुन्शी जी अपनी बात को सच्चा करना चाहें तो उस मुसलमानों के साथ के मामले में जहां २ से जितना २ धन जिस २ ने भेजा उनका नाम ठिकानादि सहित लिख और जितना जितना जिस २ कार्य में व्यय हुआ हो प्रसिद्ध सब समाचारों में छपवादें । और जितना धन उस मामले के विषय में व्यय से शेष रहा हो उसको मेरठ सभा में भेज देवें । क्योंकि जो मेरठ सभा का वह विचार निश्चित हुआ था कि यदि मुन्शी जी के मामले से चन्दे का धन बचे तो उसका क्या किया जाय । इस पर सब की यही सम्मति हुई थी कि उस धन को ॥) आने ब्याज में किसी धनाढ्य के पास

रक्खा जाय और जब २ अन्य मतावलम्बियों के साथ वैदिक आर्यों का विवाद राजन्याय घर में चले तब उसी में इसका व्यय किया जाय अन्यत्र नहीं क्योंकि यह धन इसी बात के लिये इकट्ठा किया जाता है। और जैसा आज मुन्शी जी पर कष्ट पड़ा है सम्भव है कि अन्य पर भी कभी न कभी आपड़े। इस लिये इस धन की स्थिरता और उन्नति सदा करते जाना चाहिये। परन्तु पाठकगणो इस महोपकारक कार्य को मुन्शी जी के लोभ ने बढ़ने न दिया। अब बुद्धिमान लोग विचार लेवें कि इसमें स्वामी जी और लाला रामशरणदास जी का अन्यथा व्यवहार है वा मुन्शी इन्द्रमणि जी का। अधिक लिखना बुद्धिमानों के साम्हने आवश्यक नहीं। क्योंकि प्राज्ञ जन थोड़े ही लेख से बहुत समझ लेते हैं। अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु।

निधिरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे पौषमासे सिते दले।
प्रतिप्रत्सौम्यवारे हि पत्रमेतदलेखिषम् ॥१॥

सम्वत् १९३९ पौष शुक्ले १ बुधवासरे ॥

वही आप का परम मित्र
उचित वक्ता

(१) (ओ३म्) (१७७)

श्रीयुत बिहारीलाल जी आनन्दित रहो।

धर्म्मजीवन और मित्रविलास आदि पत्रों का झूठ बकना ही रात दिन काम है। और जैपुर गजट वाला भी उनके सदृश ही बुद्धि रखता होगा। आगे जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो। जैसी सम्मति लाहोर और मेरठ वाले दें वैसी करो। तुम जानते थे कि स्वामी जी जोधपुर में गये ही नहीं। फिर तुम को शोक कैसे हुआ। और हमारे लिये ऐसे सैकड़ों मनुष्य बका करते हैं, कि जैसे मित्रविलास और धर्म्मजीवन आदि पत्रों के मांसाहारी काश्मीरी ब्राह्मण आदि लाहोर में बका करते हैं। सब से हमारा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मिती. चै. व. ५ बुधवार सं० १९३९

(शाहपुरा)

(हस्ताक्षर) [दयानन्द सरस्वती]

(१) ओ३म् (१७८)

बाबू नन्दकिशोरसिंह जी आनन्दित रहो—

पत्र तुम्हारा आया, समाचार विदित हुए। जो वहां शास्त्रार्थ विषय में लिखा सो आप निश्चित जानो वे हम से शास्त्रार्थ सन्मुख आके कभी न करेंगे। देखो दो तीन वार हम जयपुर में आये और प्रसिद्धि भी कर दी कि जिस पंडित का जिस २ विषय में शास्त्रार्थ करना हो सो सन्मुख आकर करे। परन्तु कोई भी न आया न किसी ने शास्त्रार्थ किया। अब रहा वहां आने का। उस की यह बात है कि जो श्रीमान् महाराजाजी के हस्ताक्षर का पत्र आवेगा तो आना हो सकता है अथवा वहां जो सब में अधिक विद्वान् हो उस का रेल खर्च देकर और

दो एक अच्छे उत्तम पुरुष पक्षपात रहित हों साक्षी के वास्ते जहां हम हों वहां लेकर चले आइये। अथवा जहां होंगे वहां से ही अच्छे योग्य पुरुषों को साक्षी कर के जो शास्त्रार्थ की बातें होंगी वे सब लिखी जायंगी। पुनः पत्र द्वारा श्रीमान् महाराजा जी को विदित कर दिई जायंगी और छपवा कर भी प्रसिद्ध भी होंगी। जिससे सब लोगों को सत्यासत्य विदित हो जाय। यह राजाओं का मुख्य धर्म्म है कि शास्त्रार्थ कर कराके सत्यासत्य का निश्चय करना औरों को कराना। देखो बड़े शोक की बात है कि जयपुर में अनेक गिरजाघर बन गये और पादरी लोग राम कृष्णादि भद्र पुरुषों की निरन्तर निन्दा करते हैं और सैकडहों को बहका कर भ्रष्ट कर रहे हैं। उन के हटाने को पंडित वा राजा आदि राजपुरुषों ने कुछ भी प्रयत्न न किया। और जो आप लोगों ने सत्य वेद धर्म की उन्नति होने के वास्ते समाज स्थापित किया है उसकी उन्नति होने में पंडित आदि विघ्नकर्त्ता होते हैं। इतने ही से तुम समझ लो कि ये क्या शास्त्रार्थ करेंगे सिवाय परोक्ष में गाल बजाने के। जो कोई तुम से शास्त्रार्थ करने को बात कहे उसको तुम इतना ही उत्तर दो कि लो खर्च जाने आने का हम देते हैं, चलो हमारे साथ स्वामी जी के पास शास्त्रार्थ करने को, अथवा तुम राजाजी से प्रबन्ध कराओ स्वामीजी के बुलाने के वास्ते हमारे बुलाने से तो आ नहीं सकते। किसी प्रधान पुरुष वा राजा की संमति से बुलाइये और शास्त्र[ार्थ] कर सत्य का प्रतिपादन और असत्य का खंडन कीजिये। हमतो इसमें बहुत प्रसन्न हैं जो कोई स्वामी से शास्त्रार्थ करें तो, क्योंकि हम को

भी मालूम होजायगा कि क्या सत्य है और क्या झूंठ ॥ आप भद्र पुरुष लोग इस वेदोक्त सत्यधर्म के विषय में उत्साह पूर्वक दृढ निश्चित रहेंगे तो इस समाजकी उन्नति करके संसार को फायदा पहुंचा सकोगे अन्यथा वहां उन्नति को प्राप्त हो कर फल प्राप्ति पर्य्यन्त पहुंचना कठिन है। क्योंकि वहां बडे २ धूर्त लोग हैं। तथापि जो मूर्ख लोग अपनी बुराई को नहीं छोडते तो बुद्धिमान् धर्मात्मा लोग अपनी धर्मात्मता को क्यों छोडकर दुःख सागर में पडें। देखिये—

(निंदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतेर वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः)॥

यह कवि का श्लोक है विचार लीजिये।

मि० ज्यै० शु० १४ बुध सं० १९३९।

[दयानन्द सरस्वती]

(२) ओ३म् (१७९)

श्रीयुत बिहारीलाल जी आनन्दित रहो।

पत्र तुम्हारा आज आया समाचार विदित हुआ। आप लोग धर्म में दृढ रहिये कि जिस का फल आनन्द ही होगा। जो बात श्रीयुत ठाकुर रघुनाथसिंह जी तथा श्रीयुत गोविन्द-सिंह जी ने सत्य धर्म रक्षार्थ की है यदि यह ऐसी ही है तो उन को अनेक धन्यवाद देना चाहिये। तुम्हारे लिखे अनुसार ठाकुर रघुनाथसिंह जी के पास हमने पत्र भेज दिया है। और उस के साथ जो श्रीमान् आर्य्य कुल दिवाकर महाराणा जी

ने हम को मान्यपत्र दिया है और जो हम ने स्वीकार पत्र उदयपुर में रजिष्टर कराया है उन की एक २ नकल उन के पास भेज दी है। जो कि उन की एक २ नकल आज तुम्हारे पास भेजते हैं। कुछ चिन्ता मत करो। जिन का सहाय धर्म है उसी का सहाय परमेश्वर है जब बुरे बुराई न छोड़ें तो भले भलाई क्यों छोड़ें। और सबसे मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मि० चै० शु० ९ रविवार संवत् १९४०। (शाहपुरा)

(हस्ताक्षर) [दयानन्द सरस्वती]

(२) ओ३म् (१८०)

बाबू नन्दकिसोर सिंह जी आनन्दित रहो

आज जैपुर समाज से पत्र आया। उस के पहले भी आया था। और आप ने जिस पंडित के लिये विज्ञापन दिया है इत्यादि से आप के समाज का समाचार हम जान कर यह पत्र लिखते हैं कि उस पंडित का क्या नाम है। यदि वह जैसा तुम ने विज्ञापन दिया है वैसा ही है तो उन पंडित जी को यहां शाहपुरे में हमारे पास भेज दीजिये। हम उन की परीक्षा कर के तुम्हारे लिखे प्रमाणे २०) रु० से कम महावारी न कर के किसी योग्य स्थान पै रख देंगे वा उतने ही माहवारी पर हम अपने ही पास रख लेंगे। एक वार यहां हमारे पास भेज दो। द्वितीये यह बात है कि कल तुम्हारे पास जो स्वीकार पत्र उदयपुर राज यन्त्रालय में छपा है और जो एक मान्यपत्र श्रीमान् आर्यकुलदिवाकरों ने मुझे दिया है इन दोनों की दो २ नकल तुम्हारे पास भेजते हैं। उन में से एक २ नकल तो तुम अपनी लायब्रेली में रखना और एक २ नकल आर्य्य धर्म सभा जयपुर के समाज में देना

इन दोनों बातों का उत्तर नागरी में लिख कर भेजना। इस बात से मुझ को बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप की सभा निर्विघ्नता से सदा बढ़ती है। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर सब मनुष्यों पर कृपा करे कि सब की आत्मा असत्य अधर्म व्यवहार से छूट कर सत्य धर्म व्यवहार में प्रवृत्त रहे। सब आर्य्यसमाज में मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा—

मि० वै० कृ—७ सं० १९४० । तदनुसार ता० २९ अपरेल सन् १९८३ ई०

(हस्ताक्षर)
[दयानन्दसरस्वती]

(३) ओ३म् (१८१)

बाबू नन्दकिशोरसिंह जी आनन्दित रहो—
विदित हो कि तुम्हारे तीन चार पत्र हमारे पास आये। उनका उत्तर समय पर इस लिये नहीं लिख सके इस समय वेदभाष्य का अधिक काम कर रहे हैं। तुम ने उदयपुर से लेकर शाहपुरा तक कई पत्र इस विषय में भेजे कि जब आप की यात्रा करने में दश पंद्रह दिन शेष रहें तब हम को विदित करना। इस बात का अभिप्राय जो होगा वह तुम जानते ही होगे और कुछ लिखा भी था॥ यहां के श्रीयुत महाराज योधपुराधीश और महाराजे प्रतापसिंह जी तथा रावराजा तेजसिंह जी आदि ने प्रीति के साथ पाली में सवारी भेज कर मुझ को बुलाया। अब यहां श्री योधपुराधीश तथा म[हा]राज प्रतापसिंह जी आदि प्रेम प्रीति के साथ समागम करते हैं। और दो एक व्याख्यान भी दिये। और प्रतिदिन राजपुरुष तथा प्रजापुरुष आते जाते हैं।

यथा बुद्धि पूछते भी हैं। हम यहां फैजुल्ला खां जी के बाग में ठहरे हैं। और जो विशेष लिखने योग्य होगी सो पश्चात् तुम को लिखके विदित करेंगे। और जो अं[ग]रेजी में वायविल का पूर्वापर विरुद्ध आयतें लिखी हैं उस की देवनागरी ठीक २ कराके शीघ्र योधपुर में हमारे पास भेज देना॥ सब से हमारा आशीष कहना।

आषाढ बदी ११ शनि] लिखने योग्य वहां का जो
संवत् १९४०] समाचार हो सो भी लिखना।

[दयानन्द सरस्वती] राज मारवाड़ योधपुर

(४) ओम् (१८२)

ठाकुर नन्दकिशोर जी आनन्दित रहो—

पत्र तुम्हारा श्रावण सुदी १० का लिखा आया समाचार विदित हुआ। मुन्शी गंगाप्रशाद बुद्धिमान् दृढोत्साही निर्भय धार्मिक नि:शंक था। ऐसे पुरुष का मृत्यु सुन कर जो कि उन को जानते थे शोक किस को न होगा—

(एति जीवन्तमानंदः) यह महाभाष्यकार का वचन है, कि जीते हुए पुरुष को आनन्द प्राप्त होता है। इस लिये अशोचनीय बात पर शोक करना किसी को उचित नहीं। जो एक अशक्य बात है उस के शोक में वर्तमान और भविष्यत में हानि के सिवाय दूसरा कुछ भी फल नहीं होता। अस्तु जो हुआ सो हुआ। रंह को संभालो। और बड़े प्रयत्न प्रीति और दृढोत्साह से आर्यावर्त देश के परम हितकारक सभा के उद्देशों को अपने तन मन धन से पूरे करने के लिये सर्वदा उद्यत रहो। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर सब बातें अच्छी करेगा। (सत्यमेव

जयति नानृतम् ।) सत्य ही सर्वदा विजयी होता है । झूठ कभी नहीं । इस लिये सर्वदा सत्य की उन्नति में सब जने उद्यत हैं । सब से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा—

मिति श्रावण शुक्ला १४ शुक्रे संवत् १९४०

[दयानन्दसरस्वती]

जोधपुर राज मारवाड़

(३) ओ३म् (१८३)

श्रीयुत बिहारीलाल जी आनन्दित रहो

विदित हो कि भाद्र कृष्ण १२ द्वादशी बुधवार के दिन का लिखा तुमारा पत्र आया समाचार विदित हुआ ।

इस विषय के नियम

१—वहां पं० गौरीशंकर जी का १ प्रथम माहवारी मासिक क्या था-और जब राम में नौकरी थी तब क्या मासिक था । जब अंगरेजी में नौकरी थी तब क्या मासिक नियत था ।

२—और अब कितना मासिक उन को देना चाहिये और कितने मासिक में उन का निर्वाह हो सकेगा ।

३—और जितना मासिक उन को देना होगा जिस में तुम कितना दोगे और कितने महीने वे अन्यत्र घूमेंगे और कितने महीने यहां रखना चाहते हो ।

४-और जब वे बाहर घूमेंगे वह रेल का भाडा और खाने पीने का खरच समाज से मिलेगा । और जैपुर में रहेंगे तो अपना मासिक में से खावेंगे । जब बाहर घूमेंगे तब समाज से रेल का भाडा खाने पीने का खरच मिलेगा ।

५–इस में हमारा विचार यह है कि ८ आठ महीने बाहर घूमें और ४ चार महीने जैपुर में रहा करें। इस में तुमारी क्या सम्मति है। इन सब का प्रत्युत्तर शीघ्र भेजो। जब भेजोगे उस के पश्चात् हम उसका प्रबन्ध ठीक २ करेंगे। और हम अपनी सम्मति भी लिखेंगे। पश्चात् और इस प्रबन्ध के समय के प्रथम पं० गौरीशंकर जी को १०।१५ दिन हम अपने पास बुलालेंगे, जब कि जोधपुर से अजमेर को आवेंगे। इस लिये इस पत्र का उत्तर पं० गौरीशंकर से और सभासदों से सम्मति लेकर शीघ्र जेजो। और सब से मेरा आशीर्वाद कह देना।

यहां का समाचार पश्चात् लिखेंगे। और यहां वर्षा बहुत अच्छी हो गई और हो रही है। संवत् १९४[०] मि० भा० शु० १

[दयानन्द सरस्वती]

जोधपुर राज मारवाड़

---

(६) ओ३म् (१८४)

ठाकुर नंदकिशोरसिंह जी आनंदित रहो।

पत्र आपका सभा की ओर से पंडित नंदकिशोर जी के विषय का मिति भा० सु ९ लिखा आया समाचार विदित हुआ। पत्र के उत्तर में विलंब इस लिये हुआ कि कुछ समाजों का अभिप्राय विचारणीय विशेष था इस लिये शीघ्रोत्तर नहीं दिया गया। इतने म आर्य स० अजमेर की जैसी संमति आई है कि उक्त पंडित जी को सब समाजों के उपदेशक नियत करना चाहिये वैसी ही सब समाजों की संमति निश्चत जानो। मेरी भी संमति यही है कि किसी एक समाज पर इन के. मासिक का भार नहीं दिया जायगा। और यदि तुमारी सभा में उन

के सहाय करने का समय न हो तो कुछ चिंता नहीं। तुमारे समाज को इतना ही भार रहेगा कि जिस समय जैपुर से अन्य समाज को पंडित जी जायेंगे तब रेल का खरच दूसरे समा[ज] तक का देना होगा। और जिस २ समाज में जायंगे और जितने दिन रहना होगा व्याख्यान देंगे और सभासदों को उचित समय में पढावेंगे भी, और मासिक इनका २०) रुपये रहेगा। क्योंकि २ महीने तक अपने घर का खरच खायंगे। दश महीने घूमने में उन का खरच खाने पीने में समाज की ओर का लगेगा। इन के मासिक में से कुछ खरच न होगा किन्तु २२०) रुपये उन के घर के खरच के लिये समझना चाहिये। और एक वर्ष में दो महीने की छुट्टी अर्थात् तुम्हारे समाज में और अपने घर में रह कर उपदेश वा पढाया करें। छुट्टी चाहे दो महीने की इकट्ठी ले ले अथवा छः २ महीने में एक २ महीने की। और इन के मासिक के लिये ऐसा प्रबंध किया जायगा कि प्रति मास उन के घर पे २०) रुपये पहुंचा करेंगे। चाहे किसी समाज की ओर से जाय वा हमारे पास से। इस का प्रबंध हम कर देंगे जैसा उचित समझेंगे। फिर इस में कुछ शंका न रहेगी। जिस समाज से जिस समाज तक जाना होगा वह समाज रेल का व्यय और मार्ग में खाने पीने का भी वही समाज दे दिया करेगा। इतना खर्च उठाने में समाज कोई भी निर्बल नहीं है प्रत्युत सैकडों रुपयों का खरच यदि, ऐसे २ दश पंडित भी हों तो भी समाज प्रबंध कर सकते हैं परन्तु जब समाज स्वयं समझ लेवेंगे कि पंडित जी एक वर्ष में सब समाजों में एक फेरा लगा आवेंगे पश्चात् चाहे छोटे से छोटा समाज क्यों न हो इन का सत्य उत्साह और

वक्तृत्व ऐसा है कि बड़े प्रसन्नता के साथ इन का खरच उठा लेंगे। और यदि ऐसे २ पंडित और जैसे स्वामी सहजानन्द तथा आत्मानन्द सरस्वती जहां जाते हैं वहां प्राचीन समाज को आनंद और नूतन समाज नियत होते जाते हैं। उपदेशक मंडली के लिये मेरठ समाज तथा लाहौर समाज ने भी कुछ धन संचय किया है और महाराज राधाधिराज शाहपुरेश ने भी ३०) माहवारी नियत किये हैं परन्तु उस में यह नियम किया गया है कि दो उपदेशक हमारी ओर से रक्खे जायं। चाहे १५) १५) के दो चाहे एक २०) का वा १ एक १०) का रक्खा जावे। यह नियम भी पालन करना आवश्यक है। इस लिये इस पत्र को देखते ही इन सब बातों का स्वीकार हो तो प्रत्युत्तर शीघ्र भेजो। अब हम यहां से संवत् १९४० आश्विन वदी ३० अमावास्या के दिन चल के आश्विन सुदी ४ चौथ को अर्थात् ५ अकतूवर सन् १८८३ को मसूदे पहुंच जायंगे। यदि पंडित जी को स्वीकार होगा तो मसूदे में उन को बुला लेंगे। और सब समाजों में विदित कर दिया जायगा कि पं० गौरीशंकर जी को वैदिक मत का उपदेशक नियत किया है। उस के सब नियम पूर्वक हो जायगा। और दो महीने जैपुर के समाज में रहेंगे। उन दो महीनों के दश १०) रुपये जैपुर का समाज दिया करे अर्थात् उन का २५) पच्चीस रुपये माहवारी बना रहेगा। सब से हमारा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

[दयानन्दसरस्वती]

संवत् १९४० मिति आ० वदी ८ जोधपुर राज मारवाड़।

(६) (१८५)

Bombay 8th April.

To

Mr. Nand Kishore Singh.

Dear Sir,

I gladly acknowledge the receipt of your letter of the 4th instant. I am very glad to hear that Pandit Kaloo Ram's visit to that place was crowned with success. I am also delighted to hear that arrangements have been made for the protection of cow slaughter in Jeypore. I very much wished that such a work would well have been done through the interference of a Raja. You have certainly well planned that no kine (or oxen or she-buffalœs) would be exported from your Raja. The best plan which I would like to recommend in addition to yours, would be the following :—A census so to say, of these animals should be made—that all the cows etc. of the kingdom should be counted. So also every new animal that is born (or every one that is died) should be reported to the officer in-change of the business. This counting ceremony should be made after every six months or so. The reason of this is that in the night time or so it is not quite impossible for the cattle to be stolen away.

That you have established an "Arya Dharma Sabha" is certainly a very praiseworthy undertaking, you have effected. I hope it will have for its object

the welfare of the Aryas and the *Unnati* of their divine and true Vedic religion. I anticipate a great benefit to the country from this Sabha of yours.

The cow-affair is rapidly proceeding and with utter success. Here in Bombay two thousands of signatures are being taken in favour of the prevention of the slaugher. We mean to banish cow-slaughter not simply from our native states but we mean to apply to the parliament on that acct. For this purpose, we mean to collect signatures of two crores of people. It is also hoped that the Raja also will be pleased to advise each other in this matter. Pandit Kaloo Ram ji also deserves a great merit in this respect.

As for us we are doing quite well. The work of Veda Bhashya is going on uninterrupted and successfully. The Arya Samajists of Bombay have bought a large piece of ground for the Samaj building, (for Rs. 6,500). And the necessary fund of money (about 12000 or 15000) required for the building is also ready.

We have, separately, sent to you 5 printed forms with respect to the prevention of cow-slaughter which you will soon receive. All the rules and sub-rules of the Arya Samaj should be preserved in the Samaj you have successfully established. In conclusion I mean

to bless you all. Be giving me the necessary information in time.

From the 5 papers we have sent you will understand our plan thoroughly. Kindly take the signature of as many men in your kingdom as you can and keep them with you. We shall require them before long.

[दयानन्दसरस्वती]

(१) (१८६)

Moradabad
The 13th July 1879.

Dear Col. Olcott.

Your letters of 10th June and 5th July duly to hand. Also of Madam H. P. Blavatsky of probably 30th June in Hindi.

You have acted very wisely in negotiating with the Governor of Bombay. and that British Government has no more suspicions regarding your stay in India and your movements to different places on sacred duty of *preaching the* Vedic religion.

The Kunte brothers are *fickle minded* I knew. I am glad to hear, you have begun reading "Nagari."

Your proposal for publishing a monthly journal is very sound. I only add a little to the name you have already proposed. My object is that the name

will convey to the subscribers that joint exertions are made in the paper—this may perhaps cause a great influx of subscribers. Call the journal by name " The Thecsophist or Aryaprakash."

The date of the foundation of Arya Samaj you can get from Bombay Samaj. The object of this Samaj is that all mankind

(1) " give up bad ideas, deeds and habits."

(2) and take hold of good ideas, deeds and habits." Guna (गुण) Karma (कर्म्म) and Svabhava (स्वभाव) through the ancient (Sanatana) सनातन (1) Veda Vidya. (2) God--creation (ईश्वरकृतसृष्टि)

(3) The question with regard to my life, I should say that at present, I am not quite prepared to undertake so long a business. I shall give you a brief account of me after sometime. I shall do this work myself or have it done directly under my own eye. Certificate will follow.

Yours truly,

(Sd.)————

(१) (१८७)

DEAR M. BLAVATSKY.

(1) After death man's or any one's " Atma" lives in air "Vayu" according to the sins and birtues of the departed soul. God allows the transmigration or a

new life. When there is small proportion of sins and numerous good deeds, then the soul gets a body of highly educated man or "Deva" in proportion to good deeds, and after leaving the Vidvan body, ascends to Moksha or becomes free of sorrow and troubles. When sins and virtues are equal, then soul gets a man's body. When sins increase and Virtues decrease the soul is sent to lower creation and vegetable world.

The "Jiva" or soul suffers for the increased quantity of sins in the bodies of lower animals or in form of *trees* plants &c:, and after a lapse of time when sins and virtues again kick the beam equally, then the soul again gets a human body.

In the same manner "Vidvan" after the enjoyment of blessings in Deva-life, becomes man again, when the Virtues and Sins are in equal proportion.

Sins and Virtues are of various stages and degrees.

The inferior or superior body is given according to their proportion both in the brute creation and human being as well as of Deva.

The *Mukta Jiva* enjoys eternal happiness till Mahakalpa (36000 times creation and destruction of the world) ond comes into the human body again and transmigration goes on again according to good and bad deeds.

(2). The first rishis were Aditya, Vayu, Agn.. and Angira.

The Omnipresent (Sarva Vyapaka), God inspired the sacred Vedas into their Atma. "Nothing like a Heavenly book coming from Heaven and sent by God thro' his Messanger." This is detailed at length in my Ved Bhashya from the very beginning (Vide Anka 1. &c,). You can havo it read to you. All such things are discussed at length in my books both in Sanskrit and Bhasha, which see.

(3). The Verbal prayer as well as practice is to teach others but for ones own good it should be done internally.

(4). [*a*] In order to obtain the advantage of Diksha and yoga, company of the learned (Vidvano ka sang), (4) Atma-ki-pavitrata, (purification of soul) and (5) "Pratyakshadi pramana." (The essence and reality of the Universe) one is to practice.

The practitioners are allowed to embrace the deeds which are to help in the matter; the contrary to be rejected—(see Upasanaprakarna in Veda Bhumika 9 Anka).

(*b*) The soul in human body can perform wonders. By knowing the properties and formation of all the things in the universe (between God and Bhumi (earth)—a human being can acquire power of

seeing, hearing &c., far distant objects which generally is unable to attend to.

You can write articles on any subject ; but first consult my books and write cautiously in their light. The contrary or the offspring of your own brain will have to be answered by you if criticized.

Yours———

[Sd.]———

P. S. I received the other day under cover of Col. Olcott's letter 9th July—letters from :-

(1) Peter Davidson Scotland (13th June 1879).

(2) Dr. Wyld London (17th June 1879) with a copy of spiritualist 7th (March 1879).

(3) Dr. C. C. Massey (4th June 1879).

I shall send answer to Peter Davidson in English as you say. The others will be replied in Hindi.

In these matters I shall take steps according to your suggestions. With regard to your enquiry of translating Veda-Bhashya into English and publish it into your journal, I am of opinion that :—

(1) It is an uphill work to translate faithfully one language into another—and if at all possible the translator should be equally learned in both languages. My Bhasha version is not like common vernacular ; word for word of Sanskrit is translated in Bhasha. A most competent man both in English and Sanskrit is required to translate my Veda-Bhashya —and that even not quite to the mark.

(2) Unless I hear the gist of translation thus made in English -myself, I cannot be satisfied of its accuracy and I have not time enough to do this.

If you can manage to keep the translator with me it is possible that at leisure moments he can read it over to me and have it rectified where recessary— and where he might be unable to understand, he can ask its explanation from me.

(3) Supposing all these arrangements can be successfully made—the greatest drawback then is that the Aryan (English student) community of India will, on the appearance of English translation of my Veda-Bhashya-give up the Sanskrit and Hindi studies which they are so vehemently pursuing now a days in order to enable themselves to read Veda-Bhashya, and which is the chief object of mine, so of course English translation will be greatly serviceable to European scholars only.

(4) This will lead to the diminution of the number of subscriber's of Hindi Edition of Veda-Bhashya. and cause a great deterioration in its publicatione This will result very probably in the stoppage of thu Hindi version altogether. The treasure whence yoe wish to take will exhaust. The final result will be th] total destruction of both Hindi and | Sanskri and English will thus be a favourable issue? ? ? It is not my desire to prohibit you from translating, as without the English translation the European nations cannot catch the true light. But first consider the above points.

First of all the four Vedas should be expeditely translated. I have estimated that it will take 10 years for me at the present rate of translation of all the Veds. It is most important to finish them.

Please answer all the points.

Your——